

मानिरुवा बाणा

मासिक ई-पत्रिका

देवभूमि रजत संस्करण



राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार,
मानिला- 263 667 (अल्मोड़ा)



अंक- 03 । 2025-26

नवम्बर, 2025

विवरणिका

इस अंक में

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	सम्पादक की कलम से...	i
2.	छात्र-छात्रा लेख अनुभाग	1-3
3.	प्राध्यापक लेख अनुभाग	4-26
4.	समसामयिकी	27-29
5.	नवम्बर माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ	30-32
6.	नवम्बर माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व (एक जीवन परिचय)	33-35
7.	नवम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस	36-38
8.	चित्र दीर्घा (महाविद्यालय उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ)	39-46
9.	कलाकृति अनुभाग	47-50
10.	कुछ अनुशंसित पुस्तकें	51
11.	देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य	52-53
12.	रोजगार समाचार	54

संपादकाय

स्नेही पाठकों को सादर अभिनन्दन

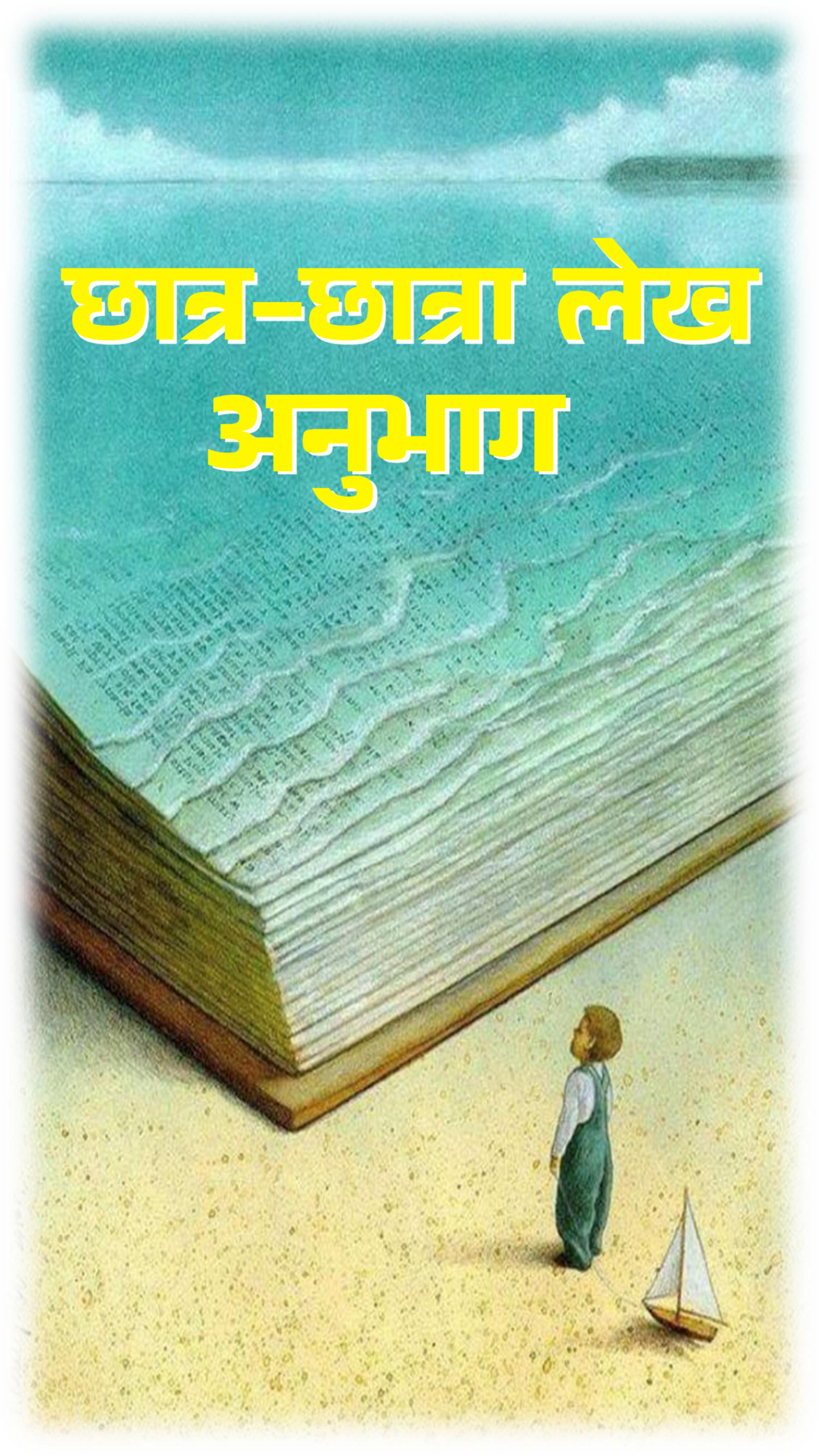
मानिलावाणी ई-पत्रिका के इस माह का अंक विशेष मायने में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह माह उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती माह को मना रहा है। जिस प्रकार एक नदी अपनी शैशवावस्था से युवावस्था में पहुँचकर पूर्ण आकार लेकर धरती को पोषित करती है उसी प्रकार हमारा युवा राज्य भी अपने नागरिकों की सुरक्षा, शिक्षा और पोषण का ध्यान रखते हुए विकास की दौड़ में अन्य राज्यों के साथ कदम से कदम मिला कर चल रहा है। राज्य स्थापना के स्वप्नों से लेकर आज 25वें स्थापना वर्ष में मनाने के दौरान राज्य के पास अपने नागरिकों के लिए कहने और देने के लिए पर्याप्त किस्से और व्यवहारिक दृष्टांत है। राज्य का रजत जयन्ती वर्ष एवं माह होने के कारण इस बार पत्रिका की थीम 'देवभूमि रजत संस्करण' है। इस बार आपको इस पत्रिका में उत्तराखण्ड के अब तक के सफर की अलग-अलग तरीकों से व्यक्त की गई भावनाएं चाहे वह कविताओं के माध्यम से हो चाहे, वह लेख के माध्यम से हो, आपके सम्मुख प्रस्तुत की जा रही हैं। तो आइए आप और हम मिलकर उत्तराखण्ड के इस गौरवशाली पलों के साक्षी बनें।

हमारी इस पत्रिका को मिल रहे आप सभी के असीम प्रेम एवं प्रोत्साहन हेतु बहुत-बहुत धन्यवाद।

डॉ० शैफाली सक्सेना (प्रधान सम्पादक)

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद (सह-सम्पादक)

છાત્ર-છાત્રા લેખ અનુભાગ



उत्तराखण्ड : देवभूमि की गाथा

हिमालय की गोद में बसा,
 शांत, पवित्र, अनुपम धरा।
 नदियों की कल-कल ध्वनि गाए,
 हरियाली में जीवन मुस्काए।
 गंगा-यमुना का उद्गम स्थल,
 केदारनाथ का पावन महल।
 बद्रीनाथ की ज्योति निराली,
 हर आस्था को दे सहाली।
 वनों में गूंजे पक्षी गान,
 झरनों में बहता मधुर तरान।
 कुमाऊँ-गढ़वाल की छटा निराली,
 लोकगीतों में झलके लाली।
 वीरों की धरती, बलिदान की गाथा,
 हर पर्वत पर लिखी है पराक्रम की परिभाषा।
 देवभूमि कहलाए यह राज्य महान,
 उत्तराखण्ड है भारत की शान।

हर्षिता
 बी०ए० तृतीय सेमेस्टर

गुरु तेग बहादुर

(2)

शौर्य जहाँ पर सर ऊँचा करता,
सत्य जहाँ पर दिप जलाता,
उस पथ के पावन रक्षक थे,
गुरु तेग बहादुर साहिब महान।



न्याय की जंजीरें टूटी थीं,
अत्याचार का था अंधियारा,
धरती रोई मानव काँपा,
धर्म हुआ था तब लाचार।

कश्मीरियों की करुण पुकार,
दिल तक पहुंची गुरु के,
उनके आँसू पोछने को,
स्वयं बढ़े वे हृदय खुले।

दिल्ली की हारती गवाह बनी,
बलिदान का वह अग्नि क्षण,
मस्तक झुका पर हार्म न झुका,
अमर हुआ उनका हर वचन।

बोल उठे संसार के दिल-
"सच्चा वीर वही कहलाता,
जो अपनी खातिर नहीं,
दूसरों की रक्षा को कट जाता॥

तनुजा नेगी

बी०ए० प्रथम सेमेस्टर

कौतीक

ईजा-ईजा आज गैल कौतीक जाणो,
स्कूल बती सीधा कौतीक जाणो,
की छी त्य पास सौ पचास डबल,
मैल ध्या नी आणो, कौतीक जाणो।

जाग रे तू, जाग
धो मुखड़ और बस्त पकड़ स्कूल भाग,
कै नी जाण तुल कौतीक आज,
बार बजे ध्या पहुँच और खा रोट साग,

रोट साग तो मैल रोज खा,
आज खाण दे भुजिले मिठे तू,
बस आज जाण दे कौतीक में,
कतु सुंदर छे मेरी ईजा तू।

सुंदर-सुंदर कबे मस्का नी लगा,
जा स्कूल, बैज्यू गीचे हब्यड़ नी मंगा,
ध्या आए चूप चापल, त्यै लीजी खीर बनूल,
और दीदी हबै, एक गाड़ी मंगूल।

दीदी जामे तो मैं ले जूल,
खीर रोज खै वैत चौमीन खूल,
बस घुमूल, दीदी दघड़ रहूल,
पैस फालतू नी खरचूल।

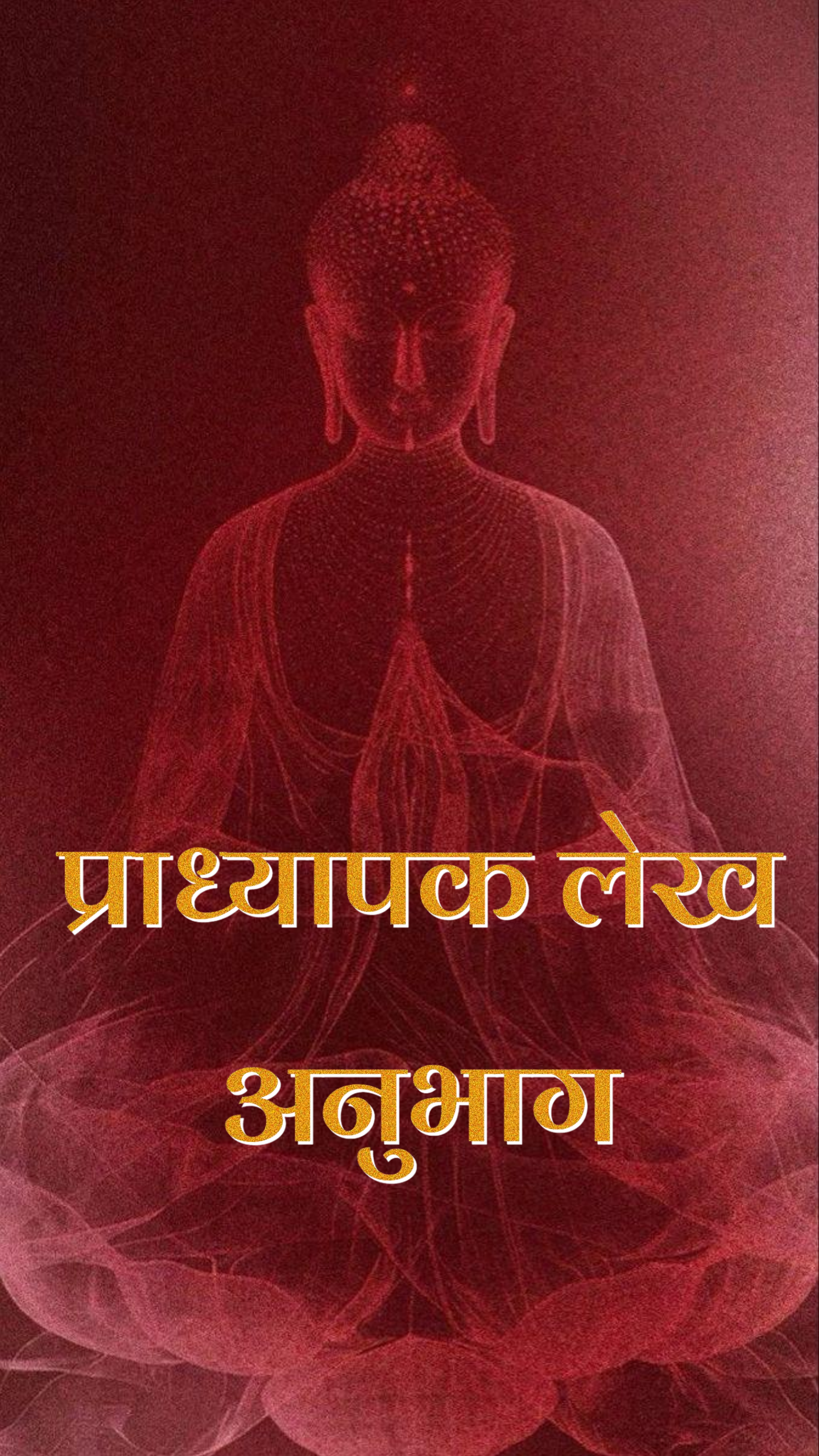
मीकी बस एक गाड़ी लीणी,
और लीणी एक बंदूक,
तोडल उमबे के ना,
उनै लीजी बनूल एक संदूक।

संदूक ते तू तब बणाले,
जब तू भलीक ध्या आले,
कती खोजुल च्यला तीकी मैं,
जब तू कौतीक में तू हरची जालै,

कौतीक ते तू आगीन ले देखी जाल,
कै पत तीकी कोई टोफी दिजाल,
कै पत तीकी ऊ बंदूक लै दिलाल,
और उनर दघड़ तीकी ऊ टीप लिझाल।

ईजा-ईजा अब मीकी कती नी जाणो,
स्कूल बती सीधा ध्या आणो,
कै नी चैहनी मीकी सौ पचास डबल,
अब मैल कती नी जाणो, ध्या आणो।





પ્રાધ્યાપક લેખ

અનુભાગ

रजत जयंती और उत्तराखण्ड सरकार की योग नीति 2025

9 नवम्बर का यह दिन हम सबके लिए केवल एक उत्सव नहीं है, बल्कि भावनाओं, संघर्षों और सपनों का स्मरण है। 25 वर्ष पहले जब उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना हुई थी, तब यह केवल एक भौगोलिक बदलाव नहीं था, यह उन उत्तराखण्ड वासियों की आकांक्षाओं का परिणाम था, जिन्होंने अपने जीवन की परवाह किए बिना "अलग राज्य" के लिए आंदोलन किया था। यह 25 वर्षों की यात्रा सिर्फ एक इतिहास नहीं है, यह एक प्रेरणा है— कि एक छोटे से राज्य की भावना कितनी बड़ी हो सकती है। आइए, हम मिलकर एक ऐसा उत्तराखण्ड का निर्माण करें, जहां हर नागरिक गर्व से कहे- “हाँ, मैं उत्तराखण्डी हूँ, और यह मेरी पहचान है।”

“न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्” (श्वेताश्वतरोपनिषद् 2/12)

अर्थात् – जो व्यक्ति अपने शरीर को योगाग्निमय बना लेते हैं। उनका शरीर रोग, जरा एवं मृत्यु से मुक्त हो जाता है।

उत्तराखण्ड को योग की जन्मभूमि के रूप में जाना जाता है व ऋषिकेश को योग-नगरी के रूप में जाना जाता है। योग एक जीवनशैली है। यह उस समय से अस्तित्व में है जब परमात्मा द्वारा इस सृष्टि की रचना की गई थी। इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि योग काफी पुरानी पद्धति है, जो कि तब से लेकर अब तक निस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा कर रहा है। “योग का अर्थ है: जुड़ना, मिलना तथा संयुक्त होना।” आध्यात्मिक दृष्टिकोण से योग का अर्थ आत्मा का परमात्मा से मिलन है। भले ही आधुनिक तकनीकी युग में एलोपैथिक दवाएँ काफी उपयोगी साबित हो रही हैं, किंतु आज भी अधिकांश शारीरिक तथा मानसिक बीमारियों हैं जिनका समुचित प्रबंधन केवल योग के द्वारा ही संभव है।

कोविड-19 महामारी में आपने देखा होगा जब पूरे विश्व में त्राहि त्राहि हो रही थी तब योग ने आम जनमानस को जीवन की राह दिखाई थी। इसीलिए प्रत्येक मानव को योग को अपने जीवनशैली का हिस्सा बनाना चाहिए व एक संतुलित जीवनशैली का निवाह करना चाहिए। उत्तराखण्ड भारत का पहला राज्य है जिसने योग नीति अपनाई है। उत्तराखण्ड जिसे देवभूमि कहा गया है। उत्तराखण्ड अपनी आध्यात्मिक विरासतों के लिए प्रसिद्ध है। वर्ष 2025 उत्तराखण्ड के लिए विशेष महत्व रखता है। क्योंकि यह राज्य अपनी स्थापना की 25वीं जयंती अर्थात् रजत जयंती मना रहा है। इसी वर्ष लागू योग नीति 2025 राज्य के लोगों के शारीरिक, मानसिक संतुलन व शांति को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसके अंतर्गत विद्यालयों व महाविद्यालय में योग शिक्षा को अनिवार्य बनाया जा रहा है। योग प्रशिक्षक केन्द्रों की स्थापना की जा रही है तथा पर्यटन के साथ योग को जोड़कर आर्थिक विकास की दिशा में भी कदम बढ़ाए जा रहे हैं। यह पहल न केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी राज्य को मजबूत बना रही है।

उत्तराखण्ड अपनी पुरानी योग परंपराओं, आध्यात्मिक और आत्मिक धरोहर के लिए जाना जाता है। योग नीति के माध्यम से राज्य सरकार इन संसाधनों का सम्पूर्ण उपयोग करना चाहती है— जैसे स्वास्थ्य सुधार, रोजगार सृजन, पर्यटन विकास और पहाड़ी क्षेत्रों का पुर्नजीवना। उत्तराखण्ड में ऋषि मुनियों ने सदियों पहले योग और ध्यान की साधना की थी। इसी परंपरा को पुनर्जीवित और आधुनिक युग से जोड़ने के लिए ही योग नीति 2025 बनाई गई है। योग नीति का मुख्य उद्देश्य "उत्तराखण्ड को योग की वैश्विक राजधानी बनाना है"।

“नदी, पर्वत, योग और ज्ञान- यह सभी है उत्तराखण्ड की पहचान”

डॉ० प्रियंका बेलवाल
(योग प्रशिक्षक)



पहाड़ की आत्मा और संघर्ष की गाथा

हिमालय की गोद में बसा उत्तराखण्ड—जहाँ हर सुबह देवदार की शाखाओं पर ओस मोतियों-सी चमकती है, जहाँ नदियाँ सूर्य की किरणों से स्वर्ण-सी दमकती हैं—वह भूमि केवल प्रकृति की सुंदरता से नहीं, बल्कि संघर्ष, आत्मसम्मान और पहचान की कहानी से भी भरी हुई है। यह वही भूमि है जहाँ सैकड़ों-हजारों पहाड़ी जनों ने अपने सपनों, पीड़ाओं और आशाओं को साथ लेकर अलग राज्य की परिकल्पना को जन्म दिया। यह कोई एक दिन में खिलने वाला फूल नहीं था; यह तो वर्षों की तपस्या का फल था।

इंद्रमणि बडोनी: हिमालय का वह दीपक जो बुझा नहीं

जब पहाड़ों की पीड़ा कोई सुनना नहीं चाहता था, तब एक आवाज़ धीरे-धीरे घाटियों में गूँजती थी- **इंद्रमणि बडोनी** की आवाज़। उन्हें **“उत्तराखण्ड का गाँधी”** कहा जाता है।

बडोनी जी ने राजनीति को आंदोलन बनाया, और आंदोलन को संस्कृति का उत्सव। वह कहते थे: **“पहाड़ की भूमि, पहाड़ के लोग। इस धरती की पहचान हम खुद लिखेंगे।”**

वे गाँव-गाँव घूमे, लोक संस्कृति को जागृत किया, और पहाड़ी अस्मिता को शब्द और स्वर दोनों दिए। उनका संयम राजनीतिक नहीं, आध्यात्मिक था—एक ऐसा धैर्य जो हिमालय की तरह अडिग खड़ा रहता है।

के.सी. सिंह बाबा: संघर्ष की वह चिंगारी जो पूरे आंदोलन में धधक गई

उत्तराखण्ड आंदोलन की धरती पर जब भी आवाज़ कमजोर पड़ती, के.सी. सिंह बाबा जैसे नेता आग बनकर खड़े हो जाते। उन्होंने बेरोजगारी, पलायन, स्वास्थ्य और शिक्षा के सवाल को देश के सामने रखा। वे बार-बार गिरफ्तार हुए, अनशन पर बैठे, सड़कों पर उतरे—लेकिन उनकी दृढ़ता कभी नहीं टूटी। उनकी आँखों में पहाड़ की भविष्य पीढ़ियों का सपना था- एक ऐसा राज्य जहाँ पहाड़ी बच्चे अपनी ही धरती पर अवसर खोजें, और जहाँ विकास हवाओं में गीत की तरह बहता रहे।

श्रीदेव सुमन : बलिदान जिसकी गूँज आज भी टिहरी की घाटियों में सुनाई देती है

श्रीदेव सुमन का संघर्ष उत्तराखण्ड की आत्मा है। टिहरी रियासत की तानाशाही के खिलाफ उन्होंने जो विद्रोह किया, वह केवल राजनीतिक विद्रोह नहीं था- वह जनमानस के सम्मान की लड़ाई थी। 84 दिन का उनका सत्याग्रह किसी धर्मग्रंथ-सा पवित्र है। उनकी मृत्यु नहीं हुई... **वे एक विचार बनकर अमर हो गए-** वह विचार जिसने पहाड़ी जनता को न्याय की राह दिखाई और आगे चलकर सारी पीढ़ियों को आंदोलन का साहस दिया।

महिला शक्ति : पहाड़ की रीढ़ और आंदोलन की धड़कन

उत्तराखण्ड आंदोलन शायद दुनिया का एक ऐसा अनोखा आंदोलन था जहाँ पहाड़ी महिलाएँ सबसे आगे रहीं। उनका संघर्ष चूल्हे की आँच जितना गर्म था और पहाड़ की चट्टान जितना मजबूत। रामपुर तिराहा, खटीमा और मसूरी की घटनाओं में महिलाएँ सबसे आगे खड़ी थीं- किसी के हाथ में लाठी नहीं, बस हक़ की पुकार थी। वे कहती थीं-

“हम अपने लिए नहीं, आने वाली पीढ़ियों के लिए लड़ रहे हैं।”

हजारों अनाम चेहरे : आंदोलन की आत्मा

गाँवों से आए युवा- जिनके हाथ में किताबें थीं, पर दिल में आंदोलन की आग; किसान- जिन्होंने खेतों से ज्यादा उम्मीदें बोईं; शिक्षक- जिन्होंने चलती कक्षाओं में ही आंदोलन के पाठ पढ़ाए... इन सबके कारण उत्तराखण्ड केवल मानचित्र पर नहीं बना, **लोगों के दिलों में भी बना।**

अंततः : 9 नवंबर 2000 – पहाड़ की सुबह का नया सूरज

लंबे संघर्ष, आँसुओं, उम्मीदों और शहादतों के बाद आखिरकार वह सुबह आई। जब भारत का 27वाँ राज्य बना- **उत्तराखण्ड**, तब ऐसा लगा मानो पहाड़ों ने पहली बार राहत की साँस ली हो। चारधाम की पवित्र हवा में, अलकनंदा और भागीरथी की लहरों में, और देवदार के पेड़ों की सरसराहट में उस दिन एक ही संदेश था- “अब हमारी पहचान हमारी होगी।”

समापन : ये आंदोलन नहीं, पीढ़ियों की कहानी है

उत्तराखण्ड राज्य-निर्माण केवल राजनीतिक यात्रा नहीं है; यह उस धरती की कथा है जिसने अपने बच्चों को विरासत में संघर्ष दिया और भविष्य में आशा।

इंद्रमणि बडोनी का शांत संकल्प,

के.सी. सिंह बाबा की दृढ़ता,

श्रीदेव सुमन का बलिदान,

महिला शक्ति का साहस,

और अनगिनत युवाओं का पसीना— इन्हीं ने मिलकर उत्तराखण्ड की कहानी लिखी है।

आज जब हम अपने कॉलेजों, सड़कों, शहरों और पहाड़ों में आगे बढ़ रहे हैं,

तो यह याद रखना जरूरी है-

यह राज्य हमें यँ ही नहीं मिला,

यह हमें पूर्वजों के संघर्ष, त्याग और सपनों की सौगात है।

उत्तराखण्ड के इन महान निर्माताओं को शत-शत नमन।

डॉ० अंजु निगम
असिस्टेंट प्रोफेसर
भौतिक विज्ञान विभाग



उत्तराखण्ड राज्य रजत जयन्ती वर्ष-2025

देवभूमि उत्तराखण्ड अपने 25 वें वर्ष में कदम रख रहा है, आइसे साथ मिलकर इस महत्वपूर्ण वर्ष- देवभूमि रजत उत्सव की शुरुआत करते हुए अपने वनों, वन्य जीवन और सतत विकास के पोषठा हैमिए प्रतिवद्ध हो। उत्तराखण्ड ने 25 वर्षों में विकास, संघर्ष और सफलताओं की मिश्रित यात्रा तय की है। 2000 में बने इस राज्य ने आर्थिक प्रगति तो की, पर पलायन बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और स्वास्थ्य जैसी समस्याएँ अव भी गहरी हैं। रजत जयन्ती आत्ममंथन और शहीदों के सपनों को साकार करने का अवसर है।

उत्तराखण्ड, जो हिमालय की गोद में बसा हुआ खूबसूरत पर्वतीय राज्य है, जिसने 9 नवम्बर 2005 को अपनी रजत जयन्ती यानी 25 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया, इस राज्य का गठन लंबी लड़ाई, आन्दोलन और भारी बलिदानों के बाद 9 नवम्बर 2000 को हुआ था। आरंभ में “उत्तरांचल” नाम से बने इस राज्य का 2007 में नाम बदलकर “उत्तराखण्ड” रखा गया क्योंकि यह नाम क्षेत्र की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान से भली-भाँति मेल खाता है, उत्तराखण्ड की 25 साल यह यात्रा राजनीतिक बदलाव, आर्थिक विकास, आमाजिक संघर्ष उऔर पर्वतीय चुनौतियों से भरी रही है, जिनमें जनता की अपेक्षाएँ और असलियत दोनों ही उजागर होती हैं।

आज रजत जयन्ती के अवसर पर एक सुखद अनुभूति हो रही है कि हिमालय की गोद में बसे इस भू-भाग का एक समृद्ध पौराणिक इतिहास रहा है, वैदिक काल से आज तक उत्तराखण्ड का हिमालयी भू-भाग धार्मिक गतिविधियों का केंद्र बिन्दु रहा है। उत्तराखण्ड, भारत का वो राज्य है जहाँ से भारत की सर्वाधिक पवित्र नदियों का उद्गम है, धार्मिक पर्यटन ने उत्तराखण्ड को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई, जिसमें उत्तराखण्ड के चारधाम और कैंचीधाम प्रमुख हैं। बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियों से लेकर केदारनाथ और बद्रीनाथ जैसे तीर्थस्थलों तक उत्तराखण्ड आध्यात्मिकता और प्राकृतिक सुंदरता का सुन्दर मेल है, यह दिन राज्य की आध्यात्मिक शक्ति और प्रकृति के साथ संतुलित जीवन का प्रतीक है, उत्तराखण्ड आज भी प्रकृति प्रेमियों और आध्यात्मिक शान्ति की तलाश करने वालों के लिए स्वर्ग समान है, यह दिन राज्य की उस परंपरा को भी उजागर करता है जिसमें हिमालय की शांति और पवित्रता को संजोने के साथ-साथ केदारनाथ, बद्रीनाथ जैसे प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों की आस्था को बनाए रखा है।

आज जरूरत है पारदर्शी भर्ती, मूल निवास और भू- कानून, पूर्ण राजधानी के लिए हिम्मती निर्णय, पलायन रोकने के लिए तीव्र प्रयास, पहाड़ में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधायें, भ्रष्टाचार और माफियाराज पर लगाम, पर्यावरण संरक्षण के लिए दीर्घकालिक नीति और सामाजिक-आर्थिक संतुलन के प्रयासों की। तभी राज्य वास्तविक रूप से शहीदों के सपनों का उत्तराखण्ड बन सकेगा। रजत जयन्ती केवल उत्सव नहीं, आत्मचिंतन, नई दिशा और संकल्प का अवसर है। आने वाले वर्षों में अगर जमीनी समस्याओं का समाधान हुआ तो उत्तराखण्ड निश्चित ही अपनी सचमुच की पहचान पा सकेगा।

शहीदों को शत शत नमन, उत्तराखण्ड को प्रणाम !

डॉ० खीला कोरंगा
असि० प्रोफेसर, इतिहास विभाग



उत्तराखण्ड के चार धाम⁽⁸⁾

धार्मिक आस्था, आध्यात्मिक शक्ति और वैज्ञानिक रहस्यों का संगम



भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत में चार धाम यात्रा का अपना विशिष्ट स्थान है। हिमालय की गोद में बसे उत्तराखण्ड के यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ न केवल धार्मिक श्रद्धा के प्रमुख केंद्र हैं, बल्कि अपनी अद्भुत भौगोलिक संरचना और प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण वैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

1. यमुनोत्री: शक्ति और शुद्धता का स्रोत

यमुनोत्री को देवी यमुना का जन्मस्थान माना जाता है। पौराणिक मान्यता है कि यहां दर्शन मात्र से ही मनुष्य के पापों का क्षय होता है और आयु में वृद्धि होती है।

- **धार्मिक महत्व:** मान्यता है कि यमुनोत्री के दर्शन से मनुष्य के पाप दूर होते हैं और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा आती है। देवी यमुना सूर्य देव की पुत्री और यमराज की बहन मानी जाती हैं। इसलिए यहाँ स्नान करने और पूजा करने से मृत्यु-भय दूर माना जाता है। यहाँ स्थित सूर्यकुंड में पकाए गए प्रसाद को अत्यंत शुभ माना जाता है।
- **वैज्ञानिक महत्व:** यमुनोत्री क्षेत्र में स्थित सूर्यकुंड और गर्म जलधाराएँ पृथ्वी की भू-तापीय सक्रियता (Geothermal activity) का स्पष्ट उदाहरण हैं। यहां का तापमान और खनिजयुक्त जल प्राकृतिक चिकित्सा में उपयोगी माना जाता है। यमुना नदी के उद्गम स्थल हिमालय के ग्लेशियर जलवायु परिवर्तन के संवेदनशील संकेतक माने जाते हैं, जिन पर वैज्ञानिक लगातार अध्ययन करते हैं।

2. गंगोत्री: गंगा का पवित्र उद्गम

गंगोत्री धाम वह स्थान है जहाँ माँ गंगा धरती पर अवतरित हुईं। यह स्थान भारतीय संस्कृति में पवित्रता, समृद्धि और मोक्ष का मार्ग माना जाता है।

- **धार्मिक महत्व:** “गंगा स्नान” को मोक्षदायी माना गया है। गंगोत्री में गंगा की पूजा मानव जीवन के शुद्धिकरण का प्रतीक है। गंगा का जल पवित्र, औषधीय और दिव्य माना जाता है। इसे हर अनुष्ठान में उपयोग किया जाता है। गंगोत्री में की गई पूजा पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए अत्यंत फलदायी मानी जाती है।
- **वैज्ञानिक महत्व:** यहां स्थित गंगोत्री ग्लेशियर (गौमुख) भारत की सबसे महत्वपूर्ण हिमनद श्रृंखलाओं में से एक है, जो गंगाजल का मुख्य स्रोत है। जल वैज्ञानिकों के लिए यह हिमनद जलवायु परिवर्तन की वास्तविकता को समझने का प्रमुख केंद्र है। गंगाजल की अनोखी विशेषताओं—जैसे लंबे समय तक शुद्ध बने रहना—पर भी वैज्ञानिक शोध होते रहे हैं, जिनमें इसकी एंटी-बैक्टीरियल प्रॉपर्टीज को महत्वपूर्ण माना गया है।

3. केदारनाथ: आध्यात्मिक ऊर्जा और भूकंपीय रहस्य

केदारनाथ भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। पौराणिक मान्यता है कि यह वही स्थान है जहाँ पांडवों को भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था।

- **धार्मिक महत्व:** मान्यता है कि महाभारत युद्ध के बाद पांडवों ने इसी स्थान पर भगवान शिव से पाप मुक्ति का आशीर्वाद प्राप्त किया था। केदारनाथ की यात्रा कठिन मानी जाती है, और यह कठिनाई स्वयं भक्ति की परीक्षा का प्रतीक है। शिव यहाँ महादेव रूप में स्थित हैं, जो भक्तों के दुख और भय को दूर करते हैं।
- **वैज्ञानिक महत्व:** केदारनाथ का मंदिर अत्यंत कठोर भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद सदियों से सुरक्षित है। 2013 की भीषण आपदा में जिस बड़े पत्थर ने मंदिर को बचाया, वह भू-वैज्ञानिक संरचना का उल्लेखनीय उदाहरण माना जाता है, जिसे वैज्ञानिक ग्लेशियल मॉरेन बोल्टर बताते हैं। मंदिर की वास्तुकला बिना सीमेंट या चूने के विशाल पाषाण खंडों से बनी है, जो भूकंप-रोधी तकनीक का प्राचीन उदाहरण है। यह क्षेत्र टेक्टोनिक प्लेट्स के सक्रिय क्षेत्र में आता है, जिससे यहां अनुसंधान की संभावनाएँ निरंतर बनी रहती हैं।

4. बद्रीनाथ: ज्ञान, तप और ऊर्जा का केंद्र

बद्रीनाथ भगवान विष्णु का पवित्र धाम माना जाता है। यहाँ ऋषिमुनि तपस्या करते रहे और वेदों का ज्ञान संजोया जाता रहा।

- **धार्मिक महत्व:** मान्यता है कि यहाँ भगवान विष्णु ने वर्षों तक कठोर तपस्या की थी, और देवी लक्ष्मी ने उनकी रक्षा के लिए बदरी (जंगली बेर) का वृक्ष बनाया था। बद्रीनाथ वैष्णव भक्तों का सर्वोच्च तीर्थ माना जाता है। यह स्थान जगत के पालनहार विष्णु के सान्निध्य में मोक्ष प्राप्त करने का द्वार माना गया है। बद्रीनाथ पहुँचकर भक्त “नार नारायण” के दर्शन करते हैं, जो धर्म, भक्ति और ज्ञान का प्रतीक है।
- **वैज्ञानिक महत्व:** बद्रीनाथ के पास बहने वाली अलकनंदा नदी हिमालय की भौगोलिक संरचना को समझने का मुख्य आधार है। क्षेत्र में पाए जाने वाले गर्म जलस्रोत (तप्तकुंड) भू-ऊष्मा ऊर्जा (Geothermal energy) के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। इस क्षेत्र की ऊँचाई और वातावरण मानव शरीर पर उच्च-ऊँचाई के प्रभावों के अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

डॉ० अंजु निगम
असिस्टेंट प्रोफेसर
भौतिक विज्ञान विभाग





आदिवासी समुदायों का पर्यावरणीय ज्ञान केवल जीवित रहने की कला नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व का एक विज्ञान है। 'पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान' (Traditional Ecological Knowledge - TEK) के रूप में जाना जाने वाला यह ज्ञान हजारों वर्षों के अनुभव, अवलोकन और प्रयोगों का परिणाम है। आज, जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता के क्षय और जल संकट जैसी अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रही है, आदिवासी ज्ञान प्रणालियाँ न केवल स्थानीय समाधान प्रदान करती हैं, बल्कि वैश्विक नीतियों के लिए भी एक मार्गदर्शक बन सकती हैं। यह लेख इस ज्ञान के विविध आयामों, आधुनिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता और इसके संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

1. प्रकृति-संगत जीवन-दृष्टि

आदिवासी समाज जंगल, जल और भूमि को केवल 'संसाधन' के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के स्रोत, परिवार के विस्तार और एक पवित्र जिम्मेदारी के रूप में देखते हैं। आधुनिक विकास का मॉडल जहाँ "प्रकृति पर विजय" और "अधिकतम दोहन" पर आधारित है, वहीं जनजातीय दर्शन "प्रकृति के साथ सहयोग" और "न्यूनतम आवश्यकता" पर जोर देता है। संयुक्त राष्ट्र और आईपीसीसी (IPCC) जैसी वैश्विक संस्थाओं ने भी अब माना है कि दुनिया की 80% शेष जैव-विविधता उन क्षेत्रों में सुरक्षित है जहाँ स्वदेशी लोग रहते हैं। यह आकस्मिक नहीं है, बल्कि उनकी जीवन-शैली का परिणाम है जो चक्रीय अर्थव्यवस्था (Circular Economy) का सबसे पुराना उदाहरण है—जहाँ कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता और हर तत्व का पुनः उपयोग होता है।

2. जनजातीय ज्ञान के प्रमुख आयाम: भारतीय और वैश्विक सन्दर्भ

आदिवासी ज्ञान प्रणाली जीवन के हर पहलू को छूती है। इसके कुछ प्रमुख स्तंभ निम्नलिखित हैं:

i. जल प्रबंधन की स्वदेशी तकनीकें: आधुनिक इंजीनियरिंग से सदियों पहले, भारतीय जनजातियों ने गुरुत्वाकर्षण और स्थानीय सामग्रियों का उपयोग कर जटिल जल प्रबंधन प्रणालियाँ विकसित कर ली थीं।

- **बाँस ड्रिप सिंचाई (मेघालय):** खासी और जयंतिया पहाड़ियों में, आदिवासी किसान बाँस की नालियों का उपयोग कर झरनों के पानी को सैकड़ों मीटर दूर अपने खेतों तक ले जाते हैं। यह प्रणाली इतनी सटीक है कि प्रति मिनट 18-20 लीटर पानी को अंत में पौधों की जड़ों तक बूँद-बूँद (20-80 बूँदें प्रति मिनट) करके पहुँचाया जाता है, जिससे पानी की बर्बादी शून्य हो जाती है।
- **जाबो (Zabo) प्रणाली (नागालैंड):** किकरुमा गाँव की यह प्रणाली जल संरक्षण का एक अद्भुत उदाहरण है। इसमें पहाड़ की चोटियों से बहने वाले वर्षा जल को तालाबों में इकट्ठा किया जाता है, फिर उसे पशुओं के बाड़े से गुजारा जाता है ताकि वह खाद से समृद्ध हो सके, और अंत में उसे धान के खेतों में छोड़ा जाता है।
- **जोहड़ और एरी:** राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में भील और मीणा समुदायों द्वारा संरक्षित 'जोहड़' और तमिलनाडु की 'एरी' (तालाब) प्रणाली यह दर्शाती है कि सूखाग्रस्त क्षेत्रों में भी जीवन कैसे पनप सकता है।

ii. जैव-विविधता संरक्षण और पवित्र उपवन (Sacred Groves): धर्म और आस्था को संरक्षण का आधार बनाना जनजातीय संस्कृति की विशेषता है। 'पवित्र उपवन' वे वन क्षेत्र हैं जिन्हें देवताओं का निवास स्थान मानकर पूरी तरह सुरक्षित रखा जाता है। उदाहरण: मेघालय के 'मावफलांग' (Mawphlang) और केरल के 'कावु' (Sarpa Kavu) ऐसे वन क्षेत्र हैं जहाँ से एक सूखी टहनी भी तोड़ना वर्जित है। ये स्थान न केवल दुर्लभ औषधीय पौधों और लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए 'जीन बैंक' (Gene Bank) का काम करते हैं, बल्कि जल स्रोतों को भी जीवित रखते हैं।

➤ **बिश्रोई समाज:** राजस्थान का बिश्रोई समुदाय इसका ज्वलंत उदाहरण है, जहाँ 'खेजड़ली' में पेड़ों को बचाने के लिए ऐतिहासिक बलिदान दिया गया। उनके 29 नियमों में से कई सीधे पर्यावरण संरक्षण से जुड़े हैं।

iii. सतत कृषि और झूम खेती (Jhum Cultivation): अक्सर झूम खेती की आलोचना की जाती है, लेकिन जब इसे पारंपरिक तरीके से (लंबे परती चक्र के साथ) किया जाता है, तो यह जैव-विविधता को बढ़ावा देती है। आदिवासी कृषि प्रणालियाँ 'एकल फसल' (Monoculture) के बजाय 'बहु-फसली' (Multi-cropping) खेती पर जोर देती हैं।

iv. औषधीय ज्ञान और स्वास्थ्य: आदिवासी 'वैद्य' जंगलों को अपनी औषधशाला मानते हैं। कानी जनजाति और आरोग्यपाचा: पश्चिमी घाट की कानी जनजाति के पास 'आरोग्यपाचा' (Trichopus zeylanicus) नामक पौधे का ज्ञान था,

जो थकान मिटाने और ऊर्जा देने में सक्षम है। वैज्ञानिकों ने इस ज्ञान के आधार पर 'जीवनी' नामक दवा विकसित की। यह दुनिया का पहला ऐसा मामला बना जहाँ ज्ञान के बदले आदिवासियों को रॉयल्टी (लाभ-साझेदारी) दी गई, जो 'एक्सेस एंड बेनिफिट शेयरिंग' (ABS) का एक मॉडल है।

3. आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता: संकट का समाधान

आज के मानवजनित (Anthropocene) युग में, यह प्राचीन ज्ञान हमें भविष्य का रास्ता दिखा सकता है।

i. जलवायु अनुकूलन (Climate Adaptation): पेरिस समझौते (2015) ने भी स्वदेशी ज्ञान को जलवायु अनुकूलन के लिए महत्वपूर्ण माना है। आदिवासी समुदायों के पास मौसम के सूक्ष्म बदलावों को पढ़ने की क्षमता है। वे चींटियों की गतिविधियों या पेड़ों के फूलने के समय से बारिश का अनुमान लगा सकते हैं। यह 'प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली' (Early Warning System) आपदा प्रबंधन में सहायक हो सकती है।

ii. प्रकृति-आधारित समाधान (Nature-based Solutions): शहरी बाढ़ और गर्मी (Heat Islands) जैसी समस्याओं के लिए कंक्रीट के बांधों के बजाय, आदिवासी शैली के वेटलैंड्स (Wetlands) और सामुदायिक वन प्रबंधन अधिक प्रभावी और सस्ते समाधान हैं।

iii. नैतिक उपभोग (Ethical Consumption): आदिवासी जीवन-शैली हमें सिखाती है कि पृथ्वी की वहन क्षमता (Carrying Capacity) सीमित है। उनकी 'आवश्यकता-आधारित' अर्थव्यवस्था आज के 'इच्छा-आधारित' उपभोक्तावाद के लिए एक नैतिक चुनौती और विकल्प दोनों प्रस्तुत करती है।

4. चुनौतियाँ और संकट

इतनी उपयोगिता के बावजूद, यह परम्परागत ज्ञान आज लुप्त होने के कगार पर है।

i. बायोपायरेसी (Biopiracy): बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अक्सर आदिवासियों के औषधीय ज्ञान का पेटेंट करवा लेती हैं बिना उन्हें कोई लाभ दिए। हल्दी और नीम के पेटेंट की लड़ाई इसका उदाहरण है। यद्यपि कानी जनजाति का मॉडल सफल रहा, लेकिन ऐसे उदाहरण कम हैं।

ii. कानूनी और भूमि अधिकार: 'वन अधिकार अधिनियम (FRA) 2006' के बावजूद, कई समुदायों को अभी भी अपनी पैतृक भूमि पर स्वामित्व नहीं मिला है। जब जंगल ही नहीं रहेंगे, तो जंगल का ज्ञान कैसे बचेगा?

iii. पीढ़ीगत अंतराल: आधुनिक शिक्षा प्रणाली और पलायन के कारण नई पीढ़ी अपने बुजुर्गों से यह मौखिक ज्ञान (Oral Tradition) नहीं सीख पा रही है। ज्ञान की यह कड़ी टूट रही है।

5. निष्कर्ष और भविष्य की राह

जनजातीय पर्यावरणीय ज्ञान को "पिछड़ा" या केवल "रोमांटिक" मानना एक भूल होगी। यह एक विकसित विज्ञान है जिसे हजारों वर्षों के "शोध और विकास" (R&D) के बाद परखा गया है। भविष्य के लिए हमें 'ज्ञान-संगम' (Knowledge Synthesis) की आवश्यकता है—जहाँ आधुनिक विज्ञान की तकनीकी क्षमता और आदिवासी ज्ञान की पारिस्थितिक समझ एक साथ मिलें। उदाहरण के लिए, उपग्रह इमेजरी का उपयोग कर आदिवासी जल संरक्षण संरचनाओं को और बेहतर बनाया जा सकता है।

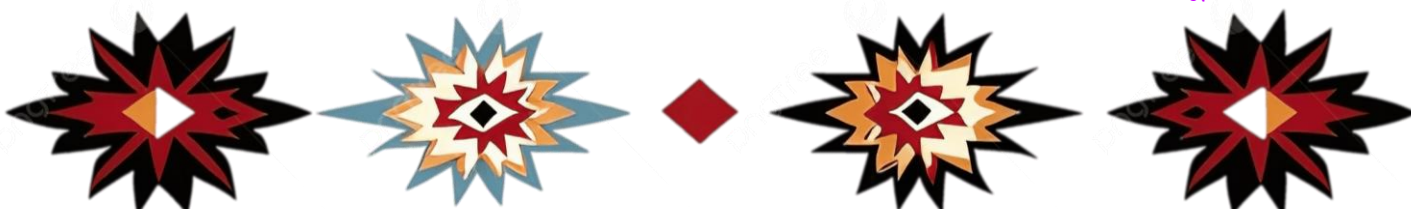
i. आवश्यक कदम: पाठ्यक्रम में समावेश: स्कूलों और विश्वविद्यालयों में स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान को पर्यावरण विज्ञान का हिस्सा बनाया जाए।

ii. दस्तावेजीकरण: 'पीपुल्स बायोडायवर्सिटी रजिस्टर' (PBR) के माध्यम से इस ज्ञान को डिजिटल रूप में संरक्षित किया जाए, ताकि बायोपायरेसी को रोका जा सके।

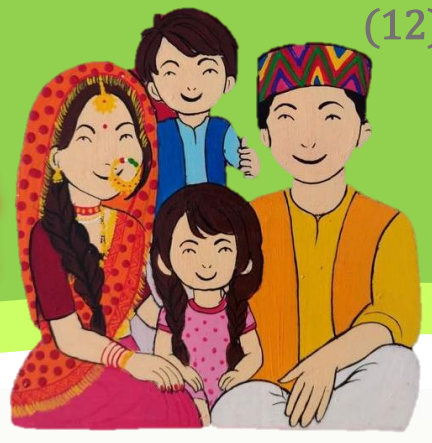
iii. सशक्तीकरण: वन प्रबंधन में आदिवासियों को केवल भागीदार नहीं, बल्कि निर्णायक भूमिका दी जाए।

अंततः आदिवासी ज्ञान हमें याद दिलाता है कि हम पृथ्वी के मालिक नहीं, बल्कि उसके संरक्षक (Trustees) हैं। सतत भविष्य की चाबी किसी प्रयोगशाला में नहीं, बल्कि हमारे जंगलों और वहाँ रहने वाले समुदायों की परंपराओं में छिपी हो सकती है।

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग



उत्तराखण्ड की लोककथाएँ और पौराणिक परंपराएँ



उत्तराखण्ड, जिसे प्राचीन काल से 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है, एक ऐसी भूमि है जहाँ हर पत्थर, हर नदी और हर पेड़ में कोई न कोई देवता निवास करता है। यहाँ की लोककथाएँ और पौराणिक परंपराएँ केवल काल्पनिक कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि ये पहाड़ी जीवन की सांस्कृतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय विरासत का अभिन्न अंग हैं। इन कथाओं में छिपे नैतिक मूल्य, प्रेम की गहराइयाँ, वीरता की कहानियाँ और प्रकृति के प्रति सम्मान आज भी उत्तराखण्ड के लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। इस लेख में हम उत्तराखण्ड की इन लोककथाओं और पौराणिक परंपराओं की गहराई में उतरेंगे, उनकी उत्पत्ति, प्रमुख कथाएँ, सांस्कृतिक महत्व और आधुनिक संदर्भों को विस्तार से समझेंगे।

उत्तराखण्ड की भौगोलिक संरचना ही इन लोककथाओं की नींव है। हिमालय की ऊँची चोटियाँ, घने जंगल, झरने और नदियाँ यहाँ की कथाओं को जीवंत बनाती हैं। गढ़वाल और कुमाऊँ दो प्रमुख क्षेत्र हैं, जहाँ की लोककथाएँ भाषा, बोली और परंपराओं में भिन्नता दिखाती हैं। गढ़वाल में जौनसारी, रावाई और जौनपुरी बोलियाँ प्रचलित हैं, जबकि कुमाऊँ में कुमाउनी और इसकी उपभाषाएँ। इन कथाओं को मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया जाता है, और इन्हें 'जागर', 'न्योली', 'पांडव नृत्य' और 'हुड़का बोल' जैसे माध्यमों से प्रस्तुत किया जाता है। जागर एक प्रकार का आध्यात्मिक गायन है, जिसमें ढोल, दमाऊँ, हुरका, थाल, बीन और रणसिंघा जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है। ये जागर देवताओं की वीरगाथाओं को जीवंत करते हैं और सामूहिक उत्सवों में गाए जाते हैं।

लोककथाओं का स्वरूप समझने के लिए हमें इनकी उत्पत्ति पर नजर डालनी होगी। उत्तराखण्ड की अधिकांश लोककथाएँ वैदिक काल से जुड़ी हैं। ऋग्वेद में उल्लिखित 'केदारखण्ड' और 'मानसखण्ड' इसी क्षेत्र के प्राचीन नाम हैं। महाभारत और रामायण जैसी पौराणिक ग्रंथों में भी उत्तराखण्ड का उल्लेख है। उदाहरणस्वरूप, महाभारत में पांडवों का स्वर्गारोहण इसी भूमि से हुआ माना जाता है। ये पौराणिक कथाएँ लोक स्तर पर रूपांतरित होकर लोककथाओं में बदल गईं। लोककथाएँ सामान्य लोगों की भाषा में हैं, जबकि पौराणिक परंपराएँ धार्मिक ग्रंथों से प्रेरित हैं। दोनों का मिश्रण उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक पहचान बनाता है।

अब हम प्रमुख लोककथाओं की ओर बढ़ते हैं। कुमाऊँ क्षेत्र की सबसे प्रसिद्ध लोककथा है 'राजुला-मालुशाही'। यह एक प्रेम कथा है जो सदियों से गाई जा रही है। कथा के अनुसार, अस्कोट के राजा जख के पुत्र मालुशाही को सपने में एक देवी आकर बताती है कि उसे सात समुद्र पार से एक कन्या लानी है। लेकिन यात्रा के दौरान वह बागेश्वर की राजकुमारी राजुला से प्रेम कर बैठता है। दोनों का प्रेम परिवार और समाज की बाधाओं से टकराता है। राजुला को जहर देकर मारने की कोशिश की जाती है, लेकिन वह बच जाती है। अंत में दोनों प्रेमी अलग-अलग मरते हैं, लेकिन उनकी आत्माएँ मिलती हैं। यह कथा प्रेम की अमरता और समाज की रूढ़ियों के खिलाफ विद्रोह का प्रतीक है। आज भी कुमाऊँ के मेलों में इस कथा को जागर के रूप में गाया जाता है, और इसमें प्रयुक्त गीत जैसे "राजुला तू कै जासी, मालुशाही कै बुलासी" लोगों की जुबान पर चढ़े हैं।

इस कथा की लोकप्रियता का कारण इसकी भावनात्मक गहराई है। राजुला एक सशक्त नायिका है, जो अपने प्रेम के लिए पहाड़ चढ़ती है और चुनौतियों का सामना करती है। मालुशाही वीर योद्धा है, लेकिन प्रेम में कमजोर। यह कथा उत्तराखण्ड की महिलाओं की मजबूती को दर्शाती है, जो पहाड़ी जीवन की कठिनाइयों में भी डटी रहती हैं। इतिहासकारों का मानना है कि यह कथा 14वीं-15वीं शताब्दी की है, जब कुमाऊँ में चंद राजवंश का शासन था। इस कथा पर कई किताबें लिखी गई हैं, और आधुनिक समय में फिल्में और नाटक भी बने हैं।

गढ़वाल क्षेत्र की एक अन्य प्रसिद्ध प्रेम कथा है 'मादल-गोरिल'। यह टिहरी गढ़वाल की कहानी है। मादल टिहरी के राजकुमार है, जबकि गोरिल सिरमौर (हिमाचल प्रदेश) की राजकुमारी। दोनों का प्रेम परिवारों के बीच दुश्मनी के कारण असंभव हो जाता है। गोरिल को जबरन दूसरे राजकुमार से ब्याह दिया जाता है, लेकिन वह मादल के लिए तड़पती रहती है। अंत में दोनों अलग-अलग मरते हैं, और उनके नाम पर आज भी 'मादल-गोरिल मेला' लगता है। इस कथा में प्रेम की पीड़ा और वियोग का मार्मिक चित्रण है। लोकगीतों में इसे "मादल गोरिल की प्रीत" के नाम से जाना जाता है। यह कथा हमें बताती है कि प्रेम सीमाओं से परे है, लेकिन सामाजिक बंधन उसे तोड़ सकते हैं।

उत्तराखण्ड की लोककथाएँ केवल प्रेम तक सीमित नहीं हैं; इनमें वीरता और न्याय की कहानियाँ भी हैं। उदाहरणस्वरूप, 'गोरिल देवता' या 'ग्वल्ल देवता' की कथा। ग्वल्ल कुमाऊँ के राजा गोरिल का पुत्र था। उसकी सौतेली माँ ने उसे मार डाला और उसकी खोपड़ी से चावल परोसा। लेकिन ग्वल्ल की आत्मा न्याय के लिए भटकती रही। अंत में वह देवता बन गया और अन्याय के खिलाफ न्याय करता है। आज चितई मंदिर में गोलजू (ग्वल्ल) को घंटियाँ चढ़ाई जाती हैं, और लोग न्याय की गुहार लगाते हैं। यह कथा न्याय व्यवस्था की महत्वपूर्णता सिखाती है और उत्तराखण्ड के लोगों में देवताओं पर विश्वास को मजबूत करती है।

पौराणिक परंपराओं में पांडवों से जुड़ी कथाएँ प्रमुख हैं। महाभारत के अनुसार, युद्ध के बाद पांडव स्वर्गारोहण के लिए हिमालय आए थे। बद्रीनाथ के पास 'स्वर्गरोही' नामक स्थान है, जहाँ से वे स्वर्ग गए माने जाते हैं। केदारनाथ में भीम पुल, द्रौपदी का डांडा जैसे स्थल हैं। चमोली जिले में हर साल 'पांडव लीला' या 'पांडव नृत्य' आयोजित होता है। यह एक प्रकार का लोक नाटक है,

जिसमें पांडवों और द्रौपदी के पात्र नाचते-गाते हैं और दर्शकों से प्रश्नोत्तरी करते हैं। यह उत्तर भारत की सबसे प्राचीन रंगमंच परंपराओं में से एक है। पांडव नृत्य में प्रयुक्त वेशभूषा और संवाद लोक भाषा में होते हैं, जो पौराणिक कथाओं को जनसामान्य तक पहुँचाते हैं।

इस नृत्य की तैयारी महीनों पहले शुरू हो जाती है। गाँव के लोग मिलकर स्क्रिप्ट तैयार करते हैं, और इसमें स्थानीय मुद्दों को भी जोड़ा जाता है। उदाहरणस्वरूप, पर्यावरण संरक्षण या सामाजिक समस्याओं पर संवाद होते हैं। यह परंपरा न केवल मनोरंजन प्रदान करती है, बल्कि सामुदायिक एकता को बढ़ावा देती है। इतिहासकार डॉ. शिवानंद नौटियाल ने अपनी पुस्तक 'उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति' में लिखा है कि पांडव लीला वैदिक काल से चली आ रही है और इसमें बौद्ध प्रभाव भी दिखता है।

उत्तराखण्ड में स्थानीय देवताओं की पूजा एक अनोखी परंपरा है। हर गाँव में अपना कुलदेवता होता है। नाग राजा या नागदेवता की पूजा सबसे प्राचीन है। लोककथा के अनुसार, जब भगवान शंकर ने समुद्र मंथन में निकला विष पिया था, तब नागों ने उनकी रक्षा की। इसलिए नागों को शिव का अवतार माना जाता है। नागपंचमी पर विशेष पूजा होती है, और जेठ की संक्रांति को नाग जागर गाए जाते हैं। ब्यासी और क्वीरी जैसे स्थलों में नाग मंदिर हैं, जहाँ लोग सर्पदंश से बचाव के लिए प्रार्थना करते हैं। यह परंपरा प्रकृति के साथ सामंजस्य सिखाती है, क्योंकि सर्प जंगलों के संरक्षक हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण देवता है नंदा देवी, जो उत्तराखण्ड की कुलदेवी हैं। लोककथा है कि नंदा देवी (पार्वती) अपने मायके कैलाश जा रही हैं, और उनके भाई यात्रा में साथ देते हैं। हर 12 साल में नंदा राजजात यात्रा निकलती है, जो 280 किलोमीटर लंबी है और विश्व की सबसे कठिन यात्राओं में से एक है। इस यात्रा में हजारों लोग भाग लेते हैं, और इसमें प्रयुक्त गीत और नृत्य लोक संस्कृति का जीवंत रूप हैं। नंदा देवी को भैंसा पर सवार माना जाता है, इसलिए भैंसों को मारना वर्जित है। यह कथा महिलाओं की महत्वपूर्णता दर्शाती है, क्योंकि नंदा देवी स्त्री शक्ति की प्रतीक हैं।

ऐड़ी और भुमियाल देवता भूमि के रक्षक हैं। इनकी पूजा बिना मूर्ति के होती है; सिर्फ एक पत्थर या त्रिशूल पर। लोककथा के अनुसार, ऐड़ी खेतों की रखवाली करता है और फसल को हानि से बचाता है। किसान फसल कटाई से पहले ऐड़ी को पूजते हैं। यह परंपरा कृषि आधारित समाज की पर्यावरण चेतना को दर्शाती है। उत्तराखण्ड के जंगलों में देवदार और बाँज के पेड़ों को देव वन माना जाता है, और इन्हें काटना पाप है। बुराँश का फूल नंदा देवी का प्रिय है, जो वसंत में खिलता है और लोकगीतों में वर्णित है।

इन लोककथाओं में प्रकृति की भूमिका अहम है। पहाड़ी जीवन प्रकृति पर निर्भर है, इसलिए कथाएँ पर्यावरण संरक्षण सिखाती हैं। चिपको आंदोलन, जो 1970 के दशक में हुआ, इन्हीं परंपराओं से प्रेरित था। महिलाएँ पेड़ों से चिपक कर उन्हें कटने से बचाती थीं, क्योंकि लोककथाओं में पेड़ देवताओं के निवास हैं। आज जलवायु परिवर्तन के दौर में ये कथाएँ प्रासंगिक हैं। वैज्ञानिक अध्ययन दिखाते हैं कि उत्तराखण्ड के जंगलों ने इन परंपराओं के कारण जैव-विविधता बनाए रखी है।

लोक साहित्य के प्रमुख रचनाकारों ने इन कथाओं को संरक्षित किया है। 19वीं सदी के गुमानी पंत कुमाउनी के प्रथम कवि थे, जिन्होंने लोककथाओं को कविता रूप दिया। शिवानंद नौटियाल और लीलाधर जगूड़ी ने लोककथाओं पर शोध किया। डॉ. त्रिलोचन पांडे और डॉ. गोविंद चातक ने जागरों का संकलन किया। हरीदत्त भट्ट 'शैलेश' और चंदोला जी लोक साहित्य के पुरोधा हैं। आधुनिक कलाकार जैसे मोहन उप्रेती, नरेंद्र सिंह नेगी, प्रीतम भरतवाण और डॉ. शेर सिंह बिष्ट 'अंशु' इन कथाओं को गीतों और एल्बमों के माध्यम से जीवित रखे हैं। नेगी जी का गीत "न्योली" लोककथाओं से प्रेरित है।

आधुनिक संदर्भ में ये परंपराएँ पर्यटन और शिक्षा से जुड़ रही हैं। उत्तराखण्ड पर्यटन विभाग नंदा राजजात और पांडव लीला को बढ़ावा देता है। स्कूलों में लोककथाओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है। लेकिन चुनौतियाँ हैं – शहरीकरण और प्रवास के कारण युवा पीढ़ी इनसे दूर हो रही है। संरक्षण के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब और सोशल मीडिया का उपयोग हो रहा है, जहाँ जागर वीडियो अपलोड किए जाते हैं।

निष्कर्षतः, उत्तराखण्ड की लोककथाएँ और पौराणिक परंपराएँ इस भूमि की आत्मा हैं। ये हमें प्रेम, न्याय, वीरता और पर्यावरण के महत्व सिखाती हैं। आज जब हम वैश्वीकरण की दौड़ में हैं, तब इन जड़ों को मजबूत करना जरूरी है। जैसे नंदा देवी हर 12 साल में लौटती हैं, वैसे ही हमें अपनी संस्कृति की ओर लौटना होगा। जय नंदा! जय बद्री-केदार! जय गोलज्यू! जय उत्तराखण्ड की अमर लोक परंपराएँ!



डॉ० कविन्द्र भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर
अंग्रेजी विभाग

उलगुलान

‘उलगुलान’ एक महान क्रान्ति, महा विद्रोह या जंगल से उठी वो आवाज जिसने अंग्रेजी शासन की जड़े हिला कर रख दी। अंग्रेजी हुकूमत ने जब भारत के राज्यों के साथ-साथ जंगलों पर भी राज करना चाहा और जल, जंगल जमीन पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए अपने मार्ग के अवरोधक आदिवासी जो कि प्रकृति से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले, प्रकृति की पूजा करने वाले व प्रकृति के रक्षक थे, का शोषण करना शुरू किया। आदिवासियों के शोषण हेतु तीन तरीके अपनाए गए, जिसमें पहला था आदिवासियों की संस्कृति व सभ्यता का नाश करना जिसके लिए अंग्रेजों ने ईसाई मिशनरियों के साथ मिलकर आदिवासियों का धर्मपरिवर्तन करना प्रारम्भ किया। दूसरा, भूमि कर (टैक्स) जिसमें अंग्रेजों के जमींदारों के साथ मिलकर आदिवासियों की भूमि पर कब्जा किया और उनकी **खुंटु कट्टी प्रथा** (आदिवासियों की सामुदायिक कृषि व्यवस्था जिसमें भूमि एक व्यक्ति की न होकर पूरे समुदाय की होती होती है) को खत्म किया। फलस्वरूप जो आदिवासी मालिक हुआ करते थे वे अब अपनी जमीन में मजदूर बनकर कार्य करते थे। जल, जंगल, जमीन पर अधिकार रखने वाले रक्षकों को ही अब इनका प्रयोग करने पर कर (Tax) देना पड़ता था। आदिवासियों के शोषण का तीसरा तरीका था रेलवे का निर्माण जिससे हजारों की संख्या में पेड़ काटे गए रेलवे के मार्ग में पड़ने वाले आदिवासियों के घरों को तोड़ा गया और उन्हें जंगल से बाहर कर दिया गया। जंगलों के किसी भी प्रकार से प्रयोग पर रोक, घरों को तोड़ना व धर्मपरिवर्तन के माध्यम से एक प्रकार से आदिवासियों के अस्तित्व को खत्म किया जा रहा था।

इन्हीं सब विपरीत परिस्थितियों के बीच 15 नवम्बर 1875 को खुंटी जिले के उलिहतु गाँव में जन्म होता है **बिरसा मुण्डा** का। बिरसा के रोने की आवाज के साथ ही शायद जंगल की खामोशी टूटना शुरू हुई थी, प्रकृति की गोद में खेलते-कूदते बिरसा बड़े हो रहे थे, वे तीव्र बुद्धि और नटखट स्वभाव के बालक थे, साथ ही बाँसुरी से बेहद लगाव रखते थे। बचपन से ही अंग्रेजों व जमींदारों की तानाशाही देखते व उससे दुखी रहते थे। पढ़ाई में तेज बिरसा ने दो वर्ष अपने मामा के घर जाकर सलगा क्षेत्र के विद्यालय में पढ़ाई की। जिसके बाद उन्हें जर्मन मिशनरी विद्यालय (चाईबासा) में आगे की पढ़ाई के लिए भेजा गया। जर्मन मिशनरी विद्यालय में दाखिले हेतु धर्म परिवर्तन करना मतलब ईसाई धर्म अपनाना अनिवार्य था, बिरसा का भी धर्मपरिवर्तन किया गया व बिरसा मुण्डा से उनका नाम बिरसा डेविड हो गया। बिरसा ने देखा कि विद्यालय में धर्मपरिवर्तन के साथ-साथ दूसरे धर्म के प्रति घृणा भी सिखाई जाती थी। पढ़ाई के साथ-साथ ईसाई धर्म की महानता और दूसरे धर्म खासकर आदिवासियों को असभ्य व जंगली बताया जाता था। एक दिन जब विद्यालय के शिक्षक द्वारा मुण्डा जनजाति के लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया जा रहा था तो बिरसा ने क्रोध में आकर विद्यालय छोड़ दिया और तय किया कि वे आदिवासियों को अंग्रेजों के शोषण से मुक्ति दिलाएंगे। विद्यालय छोड़ने के बाद उन्होंने धर्मपरिवर्तन के खिलाफ आवाज उठाई, लोगों को जागरूक किया और ईसाई धर्म छोड़कर एक नए धर्म जिसे **‘बिरसाईत धर्म’** के नाम से जाना गया की शुरुआत की। बिरसा आदिवासियों को अन्धविश्वास न करने, साफ-सफाई में रहने व औषधियों के प्रयोग के लिए प्रेरित करते थे। बिरसा को जड़ीबूटियों का बहुत ज्ञान था जिस वजह से वे लोगों का ईलाज किया करते थे, आदिवासी उन्हें **‘बिरसा वैद्य’** कहकर भी सम्बोधित करते थे।

उस दौर में जब संचार का कोई साधन नहीं था बिरसा ने लोगों के पास जा जाकर उन्हें जागरूक व संगठित करना शुरू किया। 24 अगस्त 1895 को लोगों को भड़काने के अपराध में बिरसा को गिरफ्तार किया गया। करीब 2 वर्ष वह कैद में रहे और उस दौरान उनको काफी प्रताड़ित किया गया व रिहा होने के बाद 1899 में पांगुड़ा पर्वत में विशाल बैठक का आयोजन किया गया। इसी बैठक में **‘उलगुलान’** की घोषणा

हुई। इस घोषणा के साथ ही बिरसा ने एक प्रसिद्ध नारा दिया: **"आबुआ राज ऐते जाना महारानी राज टुंडु जाना"**, मतलब रानी का राज समाप्त हो और हमारा राज स्थापित हो। बिरसा के इस महाविद्रोह ने अंग्रेजों की कीर्ति उड़ा दी। इस विद्रोह में अंग्रेजी के पुलिस थाने, गिरिजाघर, दफ्तर में आग लगा दी गई। इन्हीं सब में आदिवासी समाज के प्रमुख नेता भी मारे जाते हैं। इसी विद्रोह के चलते दम्बाड़ी हिल में बिरसा एक बैठक बुलाते हैं जिसमें हजारों की संख्या में आदिवासी एकत्रित थे, इस बैठक की खबर अंग्रेजों को मिलते ही उन्होंने पूरे सैनिक दल के साथ दम्बाड़ी हिल को घेर लिया और बन्दूकों से गोली बारी करने लगे। एक तरफ आदिवासियों के पास तीर, कमान, भाले और एक तरफ अंग्रेजों के पास बन्दूकें, अंग्रेजों का जीतना तय था, इस आक्रमण में करीब 400 आदिवासी मारे गए थे। ये घटना एक बहुत बड़ा नरसंहार है। कुछ आदिवासियों द्वारा जबरन बिरसा को वहाँ से सुरक्षित निकाल लिया गया क्योंकि महाविद्रोह को जारी रखने के लिए उनका जीवित रहना अत्यंत आवश्यक था। अंग्रेजी सरकार द्वारा बिरसा को जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर 500 रुपये का ईनाम रखा गया और बिरसा के ही किसी परिचित ने लालच में आकर उन्हें बिरसा का पता बता दिया। 03 फरवरी 1900 को बिरसा मुण्डा को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। 09 जून 1900 को जेल में ही उनका निधन हो गया और बताया गया कि हैजा की वजह से उनकी मृत्यु हुई। किंतु कहा जाता है कि जेल के रोज उन्हें पानी में थोड़ा थोड़ा जहर मिलकर दिया जाता था जिससे उनकी मृत्यु हुई।

मात्र 25 वर्ष का वो युवा जो 'उलगुलान' का नायक था जिन्होंने बड़ी संख्या में लोगों को उनके अधिकारों के लिए जागरूक किया। उसकी आवाज हमेशा के लिए खामोश हो गई किंतु लोगों के दिलों जो चिगारी लगाई थी वो उनके जाने के बाद भी जिंदा रही। अब जंगल पूरी से जाग चुका था और 'उलगुलान' का नायक मर कर भी लोगों के दिलों के जीवित था, उन्हें आज भी लोग भगवान मानकर पूजते हैं और उनके कथनों व विचारों का पालन करते हैं बिरसा मुण्डा एक नाम नहीं बल्कि एक आस्था है, विश्वास है जिसे भगवान बिरसा मुण्डा, धरती आबा, बिरसा वैद्य आदि नामों से जाना जाता है। उलगुलान की जो ज्वाला बिरसा मुण्डा जी से भड़काई हुई थी, उसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने छोटानागपुर **'काश्तकारी अधिनियम 1908'** लागू किया। यह एक बेहद ही महत्वपूर्ण कानून था क्योंकि इस कानून ने आदिवासियों की भूमि को गैर-आदिवासियों को हस्तांतरित करने पर प्रतिबंध लगा दिया था।



डॉ० खुशबू आर्या
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग

पॉकेट मनी मैनेजमेंट

सिर्फ खर्च नहीं, भविष्य की नींव

कॉलेज कैटीन के समोसे से लेकर SIP तक: छात्र जीवन में पैसे का सही इस्तेमाल कैसे करें?

हम सभी के पास पॉकेट मनी आती है—चाहे वह माता-पिता से मिली हो या हमारे पहले इंटर्नशिप स्टाइपेंड (internship stipend) से। यह पैसा अक्सर हमारी 'आजादी' का पहला प्रतीक होता है। लेकिन यह आजादी कभी-कभी महीने के अंत में खाली बटुए और 'ब्रोक' (broke) होने की फीलिंग में बदल जाती है। छात्र जीवन वित्तीय साक्षरता (financial literacy) सीखने का सबसे सही समय है। यह लेख सिर्फ पैसे बचाने के बारे में नहीं है, बल्कि पैसे को समझदारी से प्रबंधित (manage) करने के बारे में है ताकि आप एक मजबूत वित्तीय भविष्य की नींव रख सकें।

वित्तीय साक्षरता क्या है?

सरल शब्दों में, वित्तीय साक्षरता यह समझना है कि पैसा कैसे कमाया जाता है, खर्च किया जाता है और निवेश किया जाता है। यह आपको स्मार्ट वित्तीय निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाती है।

छात्रों के लिए पॉकेट मनी मैनेज करने के 5 सुनहरे नियम

1. बजट बनाएँ, आँखें बंद करके खर्च न करें: बजट बनाना उबाऊ लग सकता है, लेकिन यह सबसे महत्वपूर्ण कदम है।

बजट का मतलब है यह तय करना कि आपका पैसा कहाँ जाएगा, इससे पहले कि आप उसे खर्च करें।

कैसे करें: अपनी कुल मासिक पॉकेट मनी लिखें। फिर अपने खर्चों को श्रेणियों में बाँटें:

- **ज़रूरतें (Needs):** कॉलेज ट्रैवल, ज़रूरी स्टेशनरी, खाना।
- **इच्छाएँ (Wants):** वीकेंड पार्टी, नई टी-शर्ट, मूवी देखना।
- **बचत (Savings):** भविष्य के लिए एक निश्चित राशि।

2. '50/30/20 नियम' अपनाएँ: यह बजट बनाने का एक आसान फॉर्मूला है:

- **50% ज़रूरतें:** अपने ज़रूरी खर्चों के लिए।
- **30% इच्छाएँ:** मौज-मस्ती और गैर-ज़रूरी चीज़ों के लिए।
- **20% बचत:** इसे अलग बैंक अकाउंट में तुरंत ट्रांसफर कर दें।

3. बचत को प्राथमिकता दें (Pay Yourself First): बचत को महीने के अंत के लिए न छोड़ें। जैसे ही आपको पैसे मिलें, सबसे पहले 20% या जो भी राशि आपने तय की है, उसे बचा लें। जो बचता है, उसे खर्च करें। यह आदत आपको भविष्य में अनुशासित बनाएगी।

4. आवेग में खरीदारी (Impulse Buying) से बचें: ऑनलाइन सेल या दोस्तों के समूह में खरीदारी का मन करना सामान्य है। लेकिन खरीदारी करने से पहले खुद से पूछें: "क्या मुझे इसकी ज़रूरत है या सिर्फ इच्छा है?" अक्सर 24 घंटे का इंतज़ार आपको अनावश्यक खर्च से बचा सकता है।

5. छोटे निवेश शुरू करें: छात्र जीवन निवेश शुरू करने का सबसे अच्छा समय है, क्योंकि आपके पास 'समय' की शक्ति है (Power of Compounding)।

- आप चाहें तो ₹500 या ₹1000 प्रति माह से **SIP (सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान)** शुरू कर सकते हैं AMFI India जैसी वेबसाइट पर इसके बारे में जानकारी ले सकते हैं।
- बैंक में एक **RD (रिकरिंग डिपॉजिट)** अकाउंट खोल सकते हैं।

निष्कर्ष

पॉकेट मनी मैनेजमेंट केवल कंजूसी करना नहीं है। यह आजादी और ज़िम्मेदारी के बीच संतुलन बनाना है। आज की गई छोटी-छोटी बचत और सीखे गए वित्तीय सबक कल आपके बड़े सपनों—जैसे हायर एजुकेशन, ट्रैवल या अपना स्टार्टअप—को पूरा करने में मदद करेंगे।

याद रखें, आप जो वित्तीय आदतें आज बनाते हैं, वही आपका वित्तीय भविष्य तय करेंगी। स्मार्ट बनें, बजट बनाएँ और अपने पैसे को अपने लिए काम करने दें!

डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

देवभूमि: खूबत शोषान्त

पहाड़ों की रानी, धरती की शान,
उत्तराखण्ड मेरा, है प्यारा जहान।
पच्चीस बरस की, हुई है कहानी,
खुशियों से रंगी, जीवन की निशानी।

नदियां बहती, कल-कल करती,
फूलों की घाटी, रंग भरती।
बर्फ की चादर, ओढ़े हिमालय,
हर दिल में बसता, ये प्यारा आलया।

देवों की भूमि, ऋषियों का धाम,
साधना का पथ, शांति का नाम।
बद्री, केदार, गंगोत्री, यमुनोत्री,
पवित्र धरा ये, सबसे अनोखी।

पच्चीस सालों में, सपने सजे हैं,
गाँव-गाँव में, दीप जले हैं।
और भी आगे, बढ़ना है हमको,
खुशहाल बनाना, है उत्तराखण्ड को।

द्वारा रचित: डॉ० शैफाली सक्सेना



UTTARAKHAND@25

State Policies, Implementation and the Way Forward

Uttarakhand completes twenty-five years of its journey as a separate state carved out of Uttar Pradesh on 9 November 2000, emerging as the 27th state of the Indian Union with Dehradun as its capital and thirteen districts spread across Garhwal and Kumaon. In these twenty-five years, the state has moved from the rhetoric of a people's movement—demanding recognition of hill realities—to the complexities of policy design, implementation gaps, and the constant negotiation between ecology, economy and migration. This article looks at Uttarakhand@25 through three lenses: the evolution of state policies, the on-ground implementation experience, and a realistic way forward that honours both the aspirations of the statehood movement and the challenges of a fragile Himalayan region.

From Movement To Statehood

The Uttarakhand movement arose out of prolonged experience of neglect, with people in hilly districts facing poverty, limited infrastructure, out-migration, and a feeling that policy decisions taken in Lucknow did not recognise mountain-specific needs. After decades of sporadic demands, the movement intensified in the 1990s, culminating in the Uttar Pradesh Reorganisation Act, 2000, which led to the formal creation of the new state on 9 November 2000. State formation thus carried a moral promise: that a smaller hill state, closer to the people, would ensure better governance, inclusive development and protection of cultural-ecological heritage such as that of Kumaon, Garhwal and border regions like Dharchula.

In the early years, the focus of successive governments was on basic institution-building—creating a new administrative capital in Dehradun, setting up separate departments, and drafting state-level legislation and policies in sectors like industry, tourism and rural development. Over time, however, the agenda expanded to include questions of sustainable hydropower, disaster-resilient infrastructure, border area development, and schemes for women, Scheduled Tribes and Other Backward Classes, reflecting both the diversity and vulnerability of the Himalayan context.

Economic Transformation And Industrial Policy

Economically, Uttarakhand has undergone a significant transformation, with its economy expanding more than twenty-one times in about twenty-three years, and its per capita income rising from around ₹16,232 at formation to projections above ₹2.7 lakh in 2024-25, placing it well above the national average. This shift has been driven largely by industrialisation in the plains belts (such as Haridwar, Udham Singh Nagar and Dehradun), supported by central concessional industrial packages in the early 2000s and proactive state policies. The establishment of the State Infrastructure and Industrial Development Corporation of Uttarakhand Limited (SIDCUL) in 2002 created industrial estates that now anchor manufacturing and have helped attract thousands of enterprises and large-scale private investment.

Recent years have seen the state frame a series of sector-specific policies—such as the Uttarakhand Mega Industrial and Investment Policy 2025—to position itself as a competitive investment destination at national and international levels, promising improved ease of doing business, infrastructure support and incentives for priority sectors. Yet, this growth has been regionally skewed: while industrial hubs have prospered, many mid- and upper-hill blocks continue to rely on subsistence agriculture, small horticulture and remittances, with limited local job creation for educated youth, thereby sustaining the “pahad-to-plains” migration pattern.

Agriculture, Migration And The “Emptying Hills”

Despite the rapid expansion of the overall economy, the primary sector—comprising agriculture and animal husbandry—has seen its share in Gross State Domestic Product fall to under 10 per cent, even though nearly half the state's workers remain dependent on it for livelihood. Traditional farming in the hills faces fragmented landholdings, wildlife damage, water stress and poor market access, pushing many families to either diversify into wage labour or send younger generations to cities in the plains and metros. This has contributed to the phenomenon of “ghost villages” in some remote areas and a social fabric where elderly parents and women are left to manage farms and households with limited state support.

Policy responses have included schemes for horticulture, organic farming, cooperatives and value-chain development, but implementation is uneven and often does not fully reach border and high-altitude regions such as those around Dharchula, Munsiyari or Chakrata. The challenge is not merely to increase agricultural productivity but to make hill agriculture dignified and remunerative enough to retain youth—through niche crops, certification, processing facilities and assured procurement—while integrating it with eco-tourism and local entrepreneurship.

Infrastructure, Connectivity And Disaster Experience

In 2000, Uttarakhand inherited limited road infrastructure—roughly a few thousand kilometres—connecting its difficult mountainous terrain. Over twenty-five years, road length has risen dramatically to over 40,000 km, with almost all villages above a threshold population linked to all-weather roads, supported by state schemes and the Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana. Major projects such as the Char Dham all-weather road

and border connectivity towards Lipulekh and other passes have been prioritised both for security reasons and to support tourism and local markets.

The 2013 Kedarnath disaster and subsequent floods and landslides across the state forced a rethinking of the relationship between infrastructure, environment and safety in a highly fragile mountain ecosystem. Policies have since emphasised disaster-resilient design, early-warning systems and restrictions on unplanned construction in vulnerable zones, but the pace of road-widening and construction near riversides continues to raise concerns among ecologists and local communities. Balancing the genuine need for connectivity in far-flung villages—including tribal and border areas of Pithoragarh and Uttarkashi—with the equally urgent need to respect carrying capacity is a central policy dilemma for Uttarakhand@25.

Social Sectors: Education, Health And Human Development

Over twenty-five years, Uttarakhand has recorded measurable gains in human development indicators, with improvements in literacy, expansion of schooling facilities and a reduction in maternal and infant mortality rates. The state's Vision 2030 framework explicitly sets goals for a healthy, educated and gainfully employed population, seeking to combine social sector investment with sustainable growth. At the same time, there remain stark disparities between urban and rural areas, and between plains districts and high-altitude, sparsely populated blocks in terms of school quality, teacher availability and access to higher education.

Healthcare infrastructure has improved in district headquarters and major towns, with new medical colleges and better referral linkages, yet many interior regions still face shortages of specialists, equipment and regular services, as seen during winter closures or disasters. Tele-medicine, mobile health units and digital platforms are emerging as partial solutions, but their success depends heavily on digital connectivity and local human resources, which remain uneven. Focussed policies for tribal and border communities—where distance, terrain and weather compound vulnerabilities—need sharper implementation to ensure that statehood translates into real human security for all sections.

Tourism, Culture And Environment

Tourism is one of Uttarakhand's flagship sectors, built around the Char Dham, wildlife sanctuaries, adventure sports, spiritual circuits and unique cultural landscapes such as those of Dharchula, Adi Kailash and Om Parvat. Over the years, tourism and pilgrimage inflows have grown manifold, contributing substantially to state revenue and livelihoods, particularly in service sectors such as hospitality, transport and small trade. The government has also promoted village homestays, eco-tourism and heritage circuits, recognising the role of local culture, folk traditions and festivals in making tourism more inclusive and rooted.

However, unregulated tourism, waste mismanagement, traffic congestion and construction in ecologically sensitive areas have highlighted the environmental cost of unchecked growth. Recent initiatives, including bans on single-use plastic in Char Dham areas, plastic-recycling plants and efforts to integrate carrying-capacity assessments into planning, indicate a policy shift towards "green growth" and responsible tourism. For regions like Dharchula, where sacred landscapes and border sensitivities intersect, the way forward lies in carefully curated tourism that respects local customs, tribal communities and fragile high-altitude ecosystems.

Governance, Digital Push And Policy Implementation

On paper, Uttarakhand has emerged as a relatively disciplined state in terms of public finance, maintaining fiscal deficit targets around 3 per cent of GSDP in recent years and significantly expanding its own tax revenue base since formation. Administrative reforms and digital initiatives—such as online Detailed Project Reports, e-governance portals and increased use of digital payments—have attempted to make the state more transparent and citizen-friendly. As the state marked its silver jubilee, national leaders highlighted its progress in digital and physical connectivity, women's education, and improved accountability mechanisms.

Yet, the lived experience in many remote villages reveals persistent implementation gaps: irregular transport, inconsistent broadband connectivity, vacancies in schools and health centres, and delays in delivery of welfare schemes. Governance capacity at the top has not always translated into strong last-mile administration in fragile mountain terrain, where a landslide or heavy snowfall can isolate communities for days. The promise of Uttarakhand's statehood movement—that of sensitive, decentralised governance attuned to hill life—remains only partially fulfilled, despite genuine progress in several indicators.

Uttarakhand@25: The Way Forward

At twenty-five, Uttarakhand stands at a crossroads where the achievements of rapid economic growth, better connectivity and improved human development must be weighed against environmental risk, social inequality and the continued out-migration from hills. The way forward demands a shift from "catch-up development" to "context-sensitive development," rooted in the recognition that the Himalaya is not just another growth frontier but a living, fragile system. This calls for a re-centring of policy around mountain-appropriate livelihoods, ecological security, and genuine participation of local communities, including women, youth and tribal groups from border areas like Dharchula.

Some broad directions appear crucial. First, economic policy must deliberately rebalance towards hill districts through clusters of high-value agriculture, herbs, horticulture and small manufacturing linked to local resources, backed by cold chains, processing units and assured markets. Second, tourism policy should strictly enforce carrying-capacity norms, diversify circuits beyond a few saturated sites, and embed local culture and community benefit-sharing at its core. Third, social policy needs to focus on robust school and health infrastructure in remote areas, incentivising service providers to work in difficult locations and harnessing digital tools without ignoring basic road and communication needs. Finally, decentralised governance, stronger gram panchayats and block-level institutions, and sustained dialogue with civil society can help align state decisions

with the hopes that once powered the Uttarakhand movement. In that sense, Uttarakhand@25 is not merely an anniversary but an invitation to renew the original promise of a just, sustainable and inclusive hill state.

References

- Government of Uttarakhand, “At a Glance – Chief Minister, Government of Uttarakhand.” <https://cm.uk.gov.in/at-a-glance/>
- Government of Uttarakhand, “Uttarakhand: Vision 2030.” https://www.ihindia.org/pdf/Uttarakhand_Vision_2030.pdf
- “Uttarakhand’s economy grows 21 times in 23 years, outpacing Jharkhand, Chhattisgarh.” The New Indian Express. <https://www.newindianexpress.com/nation/2025/Feb/22/uttarakhands-economy-grows-21-times-in-23-years-outpacing-jharkhand-chhattis>
- “25 years of Uttarakhand: Between promise, progress and precarious reality.” The Pioneer. <https://www.dailypioneer.com/2025/columnists/25-years-of-uttarakhand-between-promise-progress-and-precarious-reality.html>
- “Uttarakhand@25: State marks milestone 25th year with green growth, digital push.” The Times of India. <https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/uttarakhand25-state-marks-milestone-25th-year-with-green-growth-digital-push/articleshow/122578087.cms>
- “Uttarakhand transforms from backwater to 80,000 new businesses in 25 years.” The New Indian Express. <https://www.newindianexpress.com/nation/2025/Oct/25/uttarakhand-transforms-from-backwater-to-80000-new-businesses-in-25-years>
- Government of Uttarakhand, “Uttarakhand Mega Industrial and Investment Policy – 2025 (English).” <https://doi.uk.gov.in/upload/MIIP-2025%20English.pdf>
- “Uttarakhand movement – historical background of statehood demand.” https://en.wikipedia.org/wiki/Uttarakhand_movement
- Bisht, P. S. (2019). “Uttarakhand’s State Movement: A Historical Study.” <https://andjournal.in/2019/08/07/uttarakhands-state-movement-a-historical-study/>
- “25 years of Uttarakhand: History, causes behind statehood, and journey so far.” The Indian Express. <https://indianexpress.com/article/explained/explained-politics/uttarakhand-foundation-history-causes-statehood-10355235/>
- Know India Portal, “States/UTs – Uttarakhand.” <https://knowindia.india.gov.in/states-uts/uttarakhand.php>
- President of India / Governor of Uttarakhand website: Address on special silver jubilee session of Uttarakhand Legislative Assembly. <https://governoruk.gov.in/03-11-2025-president-smt-droupadi-murmu-addressed-the-special-session-of-the-uttarakhand-legislative-assembly>
- “Prime Minister Shri Narendra Modi addresses the Silver Jubilee celebrations of Uttarakhand’s statehood.” Press Information Bureau. <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2188000>
- A Case Study of Uttarakhand and Himachal Pradesh (2000–2020), in “The Great Convergence” (policy study). https://eacpm.gov.in/wp-content/uploads/2025/02/The-Great-Convergence-final-draft_28022025-1.pdf
- “Uttarakhand must lead India’s rise with innovation, heritage and strategic resolve.” The Times of India. <https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/uttarakhand-must-lead-indias-rise-with-innovation-heritage-and-strategic-resolve/articleshow/122697269.cm>

Dr. Kavinder Bhatt
Assistant Professor
Department of English





The socio-economic landscape of Uttarakhand, a Himalayan state in northern India, is fundamentally shaped by the enduring contributions of its women, collectively referred to as "Nari Shakti" (female power). Often serving as the primary demographic within the rural workforce due to high rates of male migration, women in Uttarakhand are the principal drivers of the agricultural economy and have historically been catalysts for significant social and environmental change. This analysis explores their pivotal roles, landmark achievements, and the persistent challenges they navigate.

Economic and Environmental Stewardship

Women in Uttarakhand play a disproportionately critical role in agriculture and allied sectors, contributing approximately 90% of the total work involved in farming, forestry, and cattle care. Their labour sustains rural livelihoods and food security.

Beyond daily sustenance, Nari Shakti has been the conscience of the state's environmental movement. The globally recognized Chipko Movement of the 1970s, a non-violent social and ecological advocacy movement to protect forests, was famously led by local women such as Gaura Devi, who physically embraced trees to prevent felling by contractors. This legacy of ecological guardianship continues, with women organizing protests against deforestation and social ills like alcoholism, highlighting a deep connection between environmental health and community well-being.

Political Agency and Governance

The assertion of women's agency extends to political mobilization. During the 1990s movement for the creation of a separate state of Uttarakhand from Uttar Pradesh, women were active participants, enduring police crackdowns and challenging patriarchal norms by assuming leadership roles in the fight for better governance and regional autonomy.

In contemporary governance, their contributions are increasingly recognized. For instance, in the 2025 Uttarakhand Good Governance Awards, the Nainital district received top honours in the "Empowering Women, Transforming Lives" category, underscoring effective implementation of gender-focused policies at the local level.

Achievements and Recognition

Recent acknowledgements underscore the diverse achievements of Uttarakhand's women:

- **Healthcare Leadership:** In 2025, health workers Preeti and Nitika Kaushal were recognized with the Women Icon Award for their dedicated service as Community Health Officers.
- **Grassroots Impact:** President Droupadi Murmu recently honoured several women leaders for their substantial contributions to local governance and community development.
- **Entrepreneurship:** Through Self-Help Groups (SHGs), women produce globally exported goods including handicrafts and organic products, bolstering the local economy. Initiatives like the "Lakhpatri Didi Yojana" are designed to elevate SHG members to an annual income of at least ₹1 lakh.

Navigating Systemic Challenges

Despite these strides, women in Uttarakhand face significant socio-economic barriers. A lack of diverse economic opportunities and limited market access often confine them to unpaid or underpaid agricultural labour. Pervasive socio-cultural norms, including patriarchal attitudes and domestic violence, hinder their full participation in decision-making processes. Furthermore, limited access to credit, land ownership, and quality healthcare, exacerbated by the disproportionate impact of climate change on their daily chores of collecting water and firewood, remain critical issues.

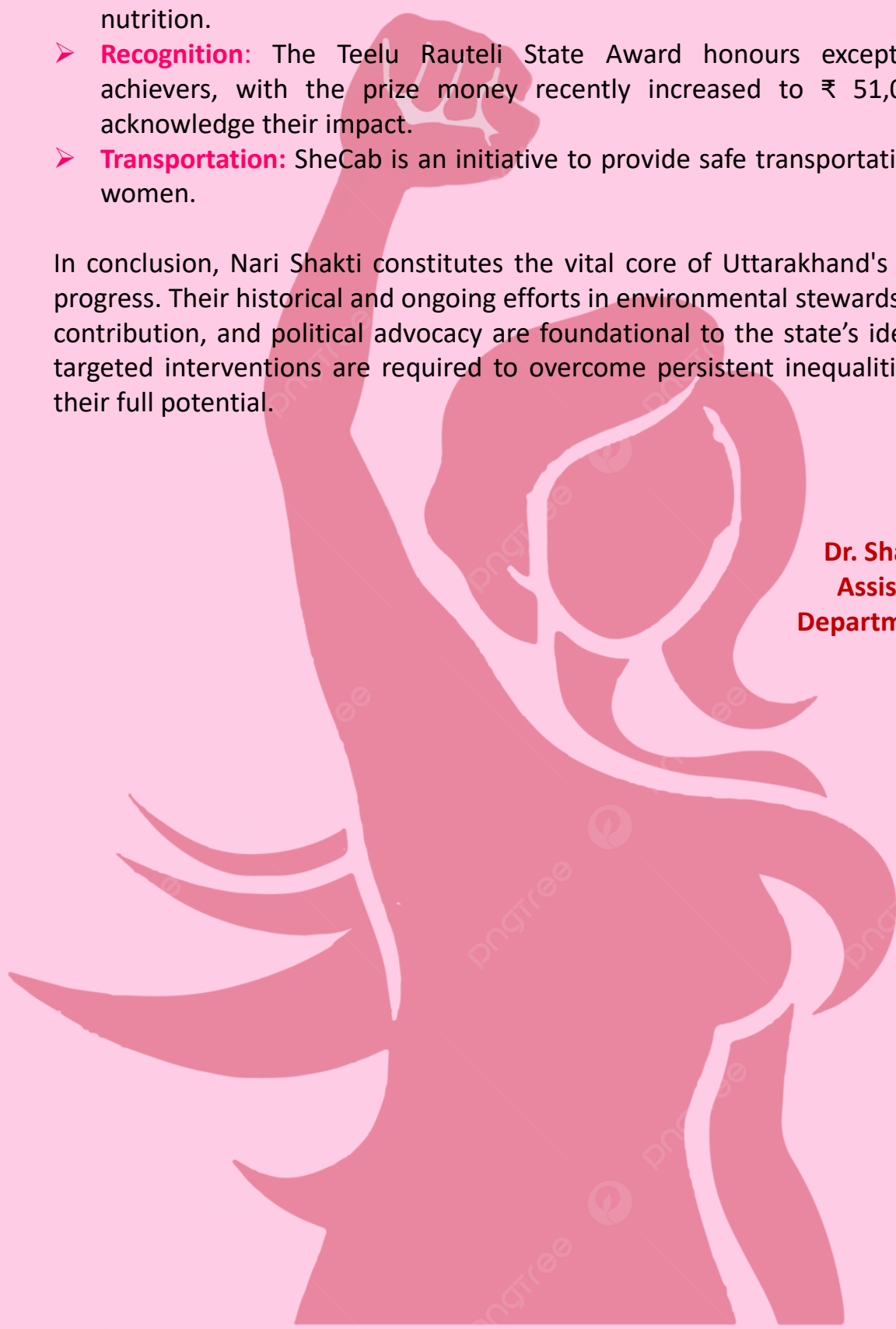
State-Led Empowerment Initiatives

To address these challenges, the government has launched several targeted programs:

- **Financial Independence:** The state provides interest-free loans of up to ₹ 5 lakh to women's SHGs, Nanda-Gaura Yojna.
- **Education and Nutrition:** The Nanda Gaura Yojana provides financial aid for girl children's education, while schemes like the Mukhyamantri Mahalakshmi Kit Scheme and Mukhyamantri Mahila Poshan Yojana address maternal and infant nutrition.
- **Recognition:** The Teelu Rauteli State Award honours exceptional women achievers, with the prize money recently increased to ₹ 51,000 to better acknowledge their impact.
- **Transportation:** SheCab is an initiative to provide safe transportation options for women.

In conclusion, Nari Shakti constitutes the vital core of Uttarakhand's resilience and progress. Their historical and ongoing efforts in environmental stewardship, economic contribution, and political advocacy are foundational to the state's identity, even as targeted interventions are required to overcome persistent inequalities and unlock their full potential.

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany



SMART HIMALAYAN REBOOT

Innovative and Sustainable Tech-Transformation of Uttarakhand

The rugged landscapes of the Himalayas are witnessing a quiet revolution. Far from a mere retreat, Uttarakhand is emerging as a crucible of technological innovation, where cutting-edge research is strategically deployed to address the region's unique geographical challenges and unlock its vast sustainable potential. This transformation, blending ancient wisdom with modern science, is charting a new course for mountain development, from precision agriculture to AI-driven disaster resilience.

The Digital Backbone of Governance

Uttarakhand's journey toward digital transformation is most palpable in the sphere of governance, where technology is bridging the gap between remote communities and administrative centres. The National Informatics Centre (NIC) Uttarakhand has been the technical backbone, developing scalable IT solutions and enhancing connectivity. Key initiatives have significantly improved service delivery and transparency:

- **Land Record Modernization:** The "Bhulekh" system has digitized and centralized land records across all 117 tehsils, providing citizens with online access to crucial information and secure, digitally signed Record of Rights (RoR) documents. The national SVAMITVA Scheme further provides legal property cards to rural household owners after drone surveys, empowering them with formal ownership rights.
- **Integrated Public Services:** The E-District portal offers single-window access to various government-to-citizen services, such as birth, death, caste, and domicile certificates, eliminating the need for physical visits. The Uttarakhand Jal Sansthan Billing Portal also facilitates online water bill payments for 9 lakh beneficiaries.
- **AI-Powered Administration:** The Raj Bhawan Secretariat automation project utilizes AI for secure online appointment scheduling with face recognition, AI chatbots for FAQs, and advanced analytics for a real-time digital dashboard, ensuring efficient and data-driven decision-making.

Space Technology: A Vantage Point for Resilience

The inherent vulnerability of the Himalayan ecosystem to natural hazards such as flash floods, landslides, and earthquakes necessitates sophisticated monitoring and early warning systems. Uttarakhand is at the forefront of leveraging space technology and artificial intelligence for proactive disaster management.

- **ISRO Collaboration:** The state's Disaster Mitigation & Management Centre (DMMC) signed an MoU with ISRO's Indian Institute of Remote Sensing (IIRS) to get advanced, satellite-based forecasts and alerts for detectable disasters up to 72 hours in advance.
- **Hazard Monitoring:** Satellite data is used for the continuous monitoring of over a thousand glacial lakes and high-altitude glaciers, landslide-prone areas, and avalanche risks to predict potential failures.
- **Post-Disaster Response:** During the 2021 Rishiganga-Chamoli flood and the 2025 Uttarkashi flash floods, ISRO's satellite imagery provided instant data on the extent of destruction, which was crucial for conducting national-level Post-Disaster Need Assessments (PDNA) and guiding search and rescue operations.

Precision and Innovation in Traditional Sectors

The infusion of technology is revitalizing traditional economic mainstays, ensuring their long-term viability in a changing climate.

Agriculture

Farmers are moving towards climate-smart agriculture using e-technology to address challenges like erratic weather and remote access.

- **Data-Driven Farming:** Soil moisture sensors in fields enable precision irrigation, and mobile apps provide farmers with hyper-local weather forecasts and expert advice on pest and disease management in local languages.
- **Drones and E-commerce:** Drones equipped with multispectral cameras perform crop health analysis and targeted spraying of fertilizers and pesticides, reducing input costs. Platforms like e-NAM (National Agriculture Market) connect farmers directly to a wider range of buyers, ensuring better price realization and reducing post-harvest losses.

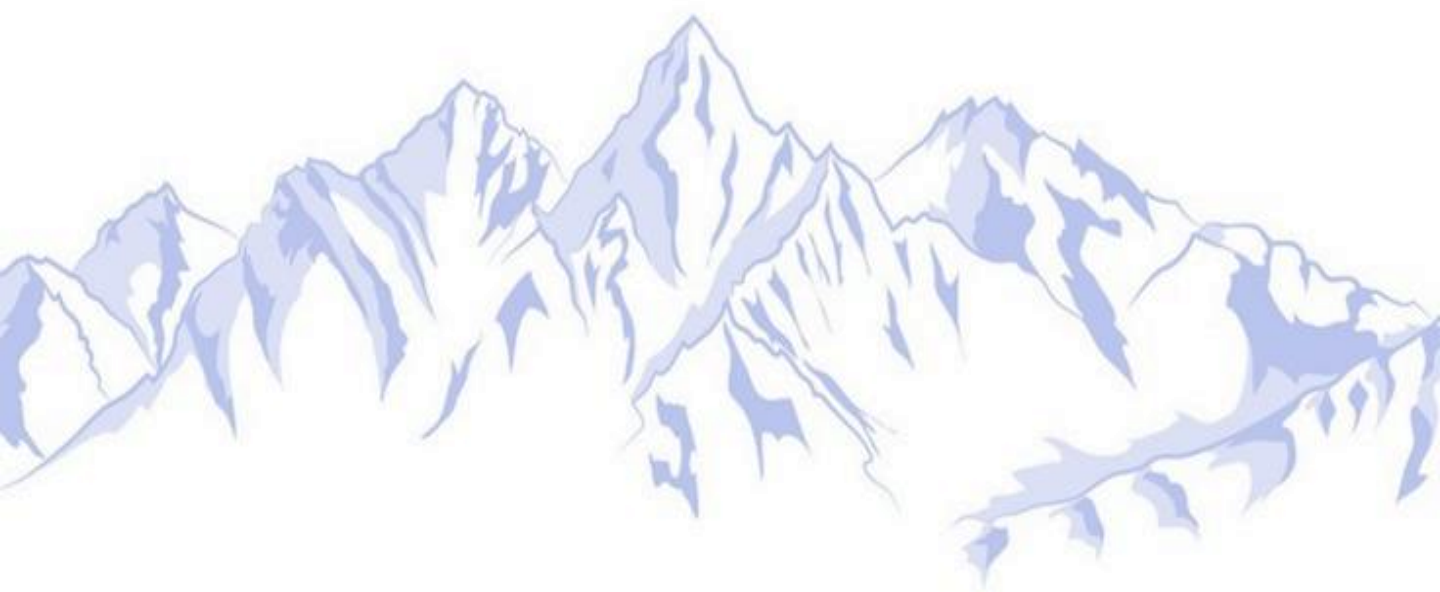
Healthcare and Energy

- **Telemedicine:** To improve healthcare access in isolated regions, telemedicine services are connecting remote Primary Health Centres (PHCs) to larger medical colleges, ensuring expert consultations are available across the state.
- **Renewable Energy Drive:** Uttarakhand is focusing heavily on solar power, with an impressive 575.53 MW installed capacity as of 2023. The state's solar policy aims for 2000 MW by 2028 and uses schemes like the Mukhyamantri Saurya Swarojgar Yojna to provide self-employment opportunities through solar energy projects in remote areas.

Cultivating an Innovation Ecosystem

Uttarakhand's long-term strategy involves not just adopting technology but also fostering a self-sustaining ecosystem of research and innovation. The state is developing science cities and AI labs to build a skilled workforce and encourage groundbreaking research. Academic institutions and government bodies collaborate on initiatives to transform districts into model examples of science-led development. The emphasis is on building a technology-driven future for the state that is both resilient to the natural environment and inclusive of its diverse communities.

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany



THE SILENT FADE

A Race to Save the Soul-Stirring Dialects of Uttarakhand

High in the mist-laden peaks of the Himalayas, within the verdant embrace of Uttarakhand, a quiet tragedy is unfolding. The soulful cadence of Kumauni and the lyrical rhythm of Garhwali— languages that have echoed through these valleys for millennia, carrying the weight of history and the spirit of a vibrant culture—are fading. They are the vanishing voices of a proud heritage, officially classified as **"vulnerable"** by UNESCO, succumbing to the relentless march of modernity, migration, and the omnipresent dominance of Hindi.

The Echoes of a Vanishing Past

Kumauni and Garhwali aren't merely dialects; they are intricate tapestries of life in the hills. They are part of the Indo-Aryan language family and are believed to have evolved from the Khas Prakrit language, also sharing grammatical roots with Rajasthani and Kashmiri due to ancient migrations. These languages possess unique words and phrases for nuances in weather, specific rituals, and emotional states that simply have no direct translation in Hindi or English. Losing them isn't just a linguistic casualty; it's a cultural amnesia. As the saying goes, if culture was a house, language would be the key to the front door, and all the rooms inside.

The threat is palpable. In urban centres like Dehradun, Nainital, or even further afield in Delhi's concrete jungle, the mother tongue is often silenced. English or Hindi is the currency of ambition, education, and progress. In many homes, while grandparents speak fluently, the youth respond in Hindi, creating a generational chasm that deepens with each passing year. A sense of shame, a misplaced belief that one's own language is "backward" or "unrefined," has expedited the decline.

The loss of specific, rich vocabulary highlights the issue: words like **"Yakulaans"** (loneliness) or **"gaadh/gadgera"** (river or water body) have no precise single-word Hindi equivalents, meaning a unique way of understanding the mountain world is dying with the words themselves.

The Spark of Resilience: The Fight Back

Yet, amidst this silent fade, a powerful counter-narrative is emerging. A wave of linguistic resilience is sweeping across the region, fuelled by impassioned locals, academics, and cultural warriors refusing to let their heritage dissolve into the ether. The battleground is diverse:

- **In the Classroom:** The Uttarakhand government, recognizing the urgency, has initiated pilot programs in numerous government schools, introducing Kumauni and Garhwali as subjects from Class 1 to 10. In over 80 primary schools in the Pauri Garhwal district, Garhwali is now a compulsory subject, aiming to embed linguistic pride from an early age.
- **In the Ivory Towers:** Universities are becoming vital repositories of knowledge. Departments for Kumauni in Kumaon University and Garhwali in Garhwal University are tirelessly working to codify the languages, develop curricula, and document a rich oral tradition before it is lost forever. Historical royal orders and land grants from as early as 1335 AD have been found, proving a long-written tradition that needs modern preservation.

- **In the Digital Age:** The fight is moving online. Tech-savvy enthusiasts are creating e-books, podcasts, and social media groups. They are using the very tools of globalization to preserve local identity. Folk music, a powerful carrier of the language, thrives in digital spaces, finding a global audience and captivating young minds with catchy rhythms and poignant lyrics. The globally famous folk song "**Bedu Pako Baro Masa**", a Kumauni classic once favoured by Prime Minister Jawaharlal Nehru, continues to be a rallying cry for cultural identity.
- **On the Streets:** Advocacy groups are tirelessly lobbying the central government for the inclusion of Kumauni and Garhwali in the Eighth Schedule of the Indian Constitution. This official recognition would unlock crucial government funding and resources, ensuring their survival is a state mandate, not just a grassroots struggle.

The Future Echo

The efforts are a powerful testament to a community's determination to preserve its soul. The disappearing dialects of Kumauni and Garhwali are more than just a regional issue; they are a microcosm of a global challenge to protect the world's linguistic diversity.

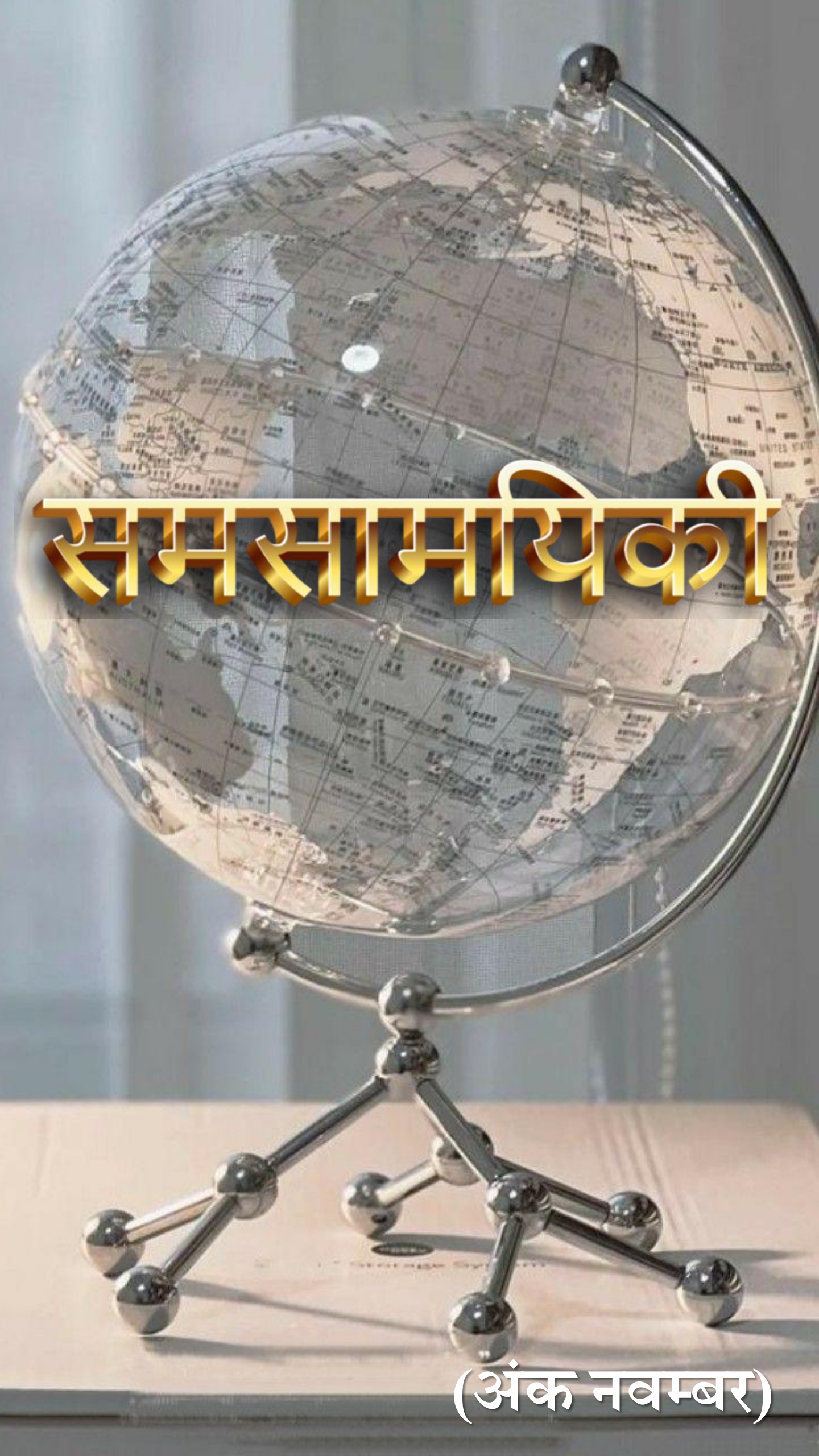
As the sun sets over the Nanda Devi peak, the hope remains that the next generation will not only understand the words of their ancestors but speak them with pride. The story of Kumauni and Garhwali is far from over—it is a compelling tale of culture staring down oblivion, fighting back one word, one song, one classroom at a time.

References

<https://share.google/ceCrIjCcfCdiGHsMM>
<https://share.google/VowKzRQjUzuqMPW7g>
<https://share.google/LwoE3L3Y354ctfNfG>
<https://share.google/gf7Z4G9YwLLYiWqOz>
<https://share.google/nRQCOIVMo4UOhvhAN>
<https://share.google/NQjcOs1yfGcCpF1Gz>
<https://share.google/hPX8hzTnLba9j6owp>
<https://share.google/Sj5NLqHx9zVkm8Uj3>
<https://share.google/otnbEEDdcFetFvRpr>
<https://share.google/pXe1sc8z3S3mO9H5w>



Dr. Shaiphali Saxena
 Assistant Professor
 Department of Botany



समसामयिकी

(अंक नवम्बर)

- किस देश ने 2025 से “Global Digital Tax Framework” लागू करने की घोषणा की है? **फ्रांस**
- प्रधानमंत्री मोदी ने “Viksit Bharat Tourism Mission” का शुभारंभ कहाँ से किया? **अंडमान-निकोबार द्वीप**
- किस भारतीय खिलाड़ी को “2025 Asia Hockey Star Award” से सम्मानित किया गया? **हरमनप्रीत सिंह**
- RBI ने किस बैंक पर वित्तीय कदाचार के लिए ₹4.5 करोड़ का जुर्माना लगाया है? **एक्सिस बैंक**
- भारत का पहला “AI-Driven Disaster Management Centre” किस राज्य में स्थापित किया गया है? **ओडिशा**
- किस भारतीय को UNESCO ने “2025 Global Education Ambassador” नियुक्त किया? **पी. वी. सिंधु**
- NASA ने 2025 में लॉन्च होने वाले मानवयुक्त चंद्र मिशन Artemis III के लिए कौन-सा नया रोवर पेश किया है? **लूनर टेरेन व्हीकल**
- भारत ने हाल ही में किस देश के साथ रक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए? **ग्रीस**
- किस राज्य ने “Mission Swasthya Kutumbam” शुरू किया? **आंध्र प्रदेश**
- COP30 (Climate Summit 2025) किस देश में होगी? **ब्राजील**
- हाल ही में तंबाकू पर पीढ़ीगत प्रतिबंध लागू करने वाला दुनिया का पहला देश कौन बना है? **मालदीव**
- इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (IPPB) ने किस संगठन के साथ कर्मचारियों के लिए भविष्य निधि सेवाओं हेतु MoU साइन किया? **EPFO**
- QS University Rankings में एशिया के टॉप 100 में किस देश की कई शिक्षा संस्थान शामिल हुए हैं? **भारत**
- बिहार के कटिहार जिले में स्थित किस झील को रामसर साइट घोषित किया गया? **गोगाबील**
- इफको और अमूल को दुनिया की अग्रणी किस श्रेणी की समितियों में शामिल किया गया? **कृषि सहकारी**
- CBSE ने अपना पहला अंतरराष्ट्रीय सहोदया सम्मेलन किस शहर में आयोजित किया? **दुबई**
- भारत का लक्ष्य 2047 तक कितने करोड़ टन स्टील उत्पादन क्षमता हासिल करना है? **50 करोड़ टन**
- हरित हाइड्रोजन पर अंतराष्ट्रीय सम्मेलन (IGHC 2025) कहाँ आयोजित किया जाएगा? **नई दिल्ली**
- हाल ही में किस भारतीय राज्य में यूरोपीय संघ इंटरनेशनल डेयरी डेवलपमेंट सेंटर का शुभारंभ किया गया? **केरल**
- किस देश ने दुनिया का पहला सस्टेनेबल प्लांट-बेस्ड विमान ईंधन का परीक्षण किया? **फ्रांस**
- दुनिया का पहला सोलर-चालित ग्लोबल साइक्लोन मॉनिटरिंग सैटेलाइट कौन-सा है? **साइक्लोन वॉच-1**
- भारत ने किस देश के साथ 150 करोड़ रुपये की रक्षा तकनीकी साझेदारी की? **इजराइल**
- दक्षिण अफ्रीका श्रृंखला के लिए किसे टेस्ट उप-कप्तान नियुक्त किया गया है? **ऋषभ पंत**
- भारतीय नौसेना ने कौन से नए सर्वेक्षण पोत को कोच्चि नौसैनिक अड्डे पर सेवा में शामिल किया है? **इक्षक**
- जम्मू बीएसएफ मैराथन 2025 की तैयारी के तहत मैराथन एक्सपो का आयोजन किसके द्वारा किया जा रहा है? **बीएसएफ जम्मू फ्रंटियर मुख्यालय**
- 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे होने का उद्घाटन समारोह संस्कृति मंत्रालय द्वारा कहाँ किया जा रहा है जो 7 नवंबर 2025 से 7 नवंबर 2026 तक चलेगा? **नई दिल्ली**
- अमेरिकी प्रशासन किस नए नियम के तहत मोटापा या मधुमेह जैसी गंभीर चिकित्सा स्थितियों वाले व्यक्तियों को वीजा देने से इनकार करने की योजना बना रहा है? **पब्लिक चार्ज नियम**

- किस देश ने इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और 36 अन्य अधिकारियों के खिलाफ नरसंहार का गिरफ्तारी वारंट जारी किया है? **तुर्किये**
- वैश्विक शांति प्रार्थना महोत्सव (GPPF) के लिए भारत से भूटान कौन से पवित्र अवशेष भेजे गए? **भगवान बुद्ध के पिपरहवा-कपिलवस्तु अवशेष**
- कौन सा राज्य अपने आदिवासी समुदायों के लिए बड़े पैमाने पर जीनोम सीक्वेंसिंग परियोजना शुरू करने वाला भारत का पहला राज्य बन गया है? **गुजरात**
- सितंबर 2026 तक 214 प्रमुख पुराने लैंडफिल को साफ करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा शुरू किए गए नए कार्यक्रम का नाम क्या है? **डंपसाइट रिमेडिएशन एक्सेलेरेटर प्रोग्राम (DRAP) और शहरी निवेश खिड़की (UiWIN)**
- नैनी सैनी हवाई अड्डा, जिसे भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI) द्वारा अधिग्रहित किया जाएगा, उत्तराखंड के किस शहर में स्थित है? **पिथौरागढ़**
- हाल ही में T20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में सबसे तेज (पारी के हिसाब से) 1,000 रन बनाने वाले भारतीय कौन बने हैं? **अभिषेक शर्मा (28 पारियों में)**
- हाल ही में किस राज्य के मंत्रिमंडल ने बहुविवाह (polygamy) पर प्रतिबंध लगाने वाले विधेयक को मंजूरी दी है, जिसमें सात साल की कठोर सजा का प्रस्ताव है? **असम**
- मिस्र के काहिरा में आयोजित ISSF विश्व चैंपियनशिप में पुरुषों की 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल स्पर्धा में रजत पदक किसने जीता? **अनीश भानवाला**
- हाल ही में रेलवे पुलिस बल (RPF) द्वारा उजागर किए गए ई-तत्काल टिकट घोटाले (E-Tatkal Ticket Scam) में कुछ गिरोह किस नाम के बॉट सॉफ्टवेयर का उपयोग कर कुछ ही सेकंड में टिकट बुक करते पाए गए? **ब्रहोस, टेस्ला, डॉ. डूम और एवेंजर्स**
- हाल ही में, भारत में अमरीका के नए राजदूत के रूप में किसे नियुक्त किया गया है? **सर्जियो गोर**
- हाल ही में, बीएसएफ (BSF) की किस ट्रेकर डॉग को हैदराबाद में 'सरदार वल्लभभाई पटेल आरआरयू राष्ट्रीय के9 वीरता पुरस्कार-2025' से सम्मानित किया गया? **बबीता**
- एक बड़े ऑपरेशन में, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने किस आतंकी समूह से जुड़े एक अंतर-राज्यीय "व्हाइट-कॉलर" आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया, जिसमें लगभग 2900 किलोग्राम विस्फोटक बरामद हुआ? **जैश-ए-मोहम्मद (JeM) और अंसार गज़वत-उल-हिंद (AGH)**
- ISSF विश्व चैंपियनशिप में पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल में स्वर्ण पदक जीतने वाले भारतीय निशानेबाज का नाम क्या है? **सम्राट राणा**
- भारत की पहली महिला रेसर कौन बनी हैं जिन्होंने महज 9 साल की उम्र में नेशनल कार्टिंग चैंपियनशिप का खिताब जीता है? **अर्शी गुप्ता**
- यूआईडीआई ने बच्चों के लिए आधार बायोमेट्रिक अपडेट को बढ़ावा देने के लिए किसके साथ समझौता किया है? **बिहेवियरल इनसाइट्स**
- 2025 का बुकर पुरस्कार (Booker Prize) किस लेखक को प्रदान किया गया? **डेविड सज़ाले**
- ग्लोबल IP इंडेक्स 2025 में भारत ने किस क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की? **पेटेंट फाइलिंग (छठा स्थान)**
- हाल ही में भारत-श्रीलंका के मध्य संयुक्त सैन्य अभ्यास 'मित्र शक्ति XI' कहाँ शुरू हुआ है? **कर्नाटक**
- ताज़ा आंकड़ों के अनुसार हाल ही में भारत का सबसे बड़ा कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता देश कौन बना है? **रूस**
- भारत कौन-सा नया रक्षा सिस्टम शामिल करने जा रहा है? **लेजर आधारित ड्रोन रक्षा प्रणाली**
- DRDO ने भारत की पहली Nitric-Oxide Bound Dressing किस रोग के लिए लॉन्च की? **डायबिटिक फुट अल्सर**
- पीएम फसल बीमा योजना में अब किस नुकसान को कवर किया जाएगा? **जंगली जानवरों के हमले**
- नीतीश कुमार ने कितनीवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली? **दसवीं बार**

- भारत की कला निर्देशक थीटा थारनी को फ्रांस सरकार द्वारा कौन-सा सम्मान दिया गया? **ऑर्डर ऑफ आर्ट्स एंड लेटर्स**
- भारत में सिकल सेल रोग के लिए पहली स्वदेशी CRISPR आधारित जीन थेरेपी किसने शुरू की? **भारत सरकार**
- भारत में जन्मे कछुए 'मुक्ति' किस प्रजाति से संबंधित हैं? **पंच शाकू प्रजाति**
- मिस यूनिवर्स 2025 में किस देश की प्रतिभागी विजेता रहीं? **मैक्सिको**
- हाल ही में विजयनगर काल के अंकित 103 स्वर्ण सिक्कों की खोज कहाँ हुई है? **तमिलनाडु**
- NASA के 'HelioScan Mission' का उद्देश्य क्या है? **सूर्य के चुंबकीय तूफानों का अध्ययन**
- 6G टेस्टिंग में विश्व में पहला स्थान किसने प्राप्त किया? **चीन**
- चीन वर्ष 2028 तक दुनिया का पहला कौन-सा कृत्रिम ढांचा लॉन्च करेगा? **तैरता हुआ कृत्रिम द्वीप**
- ऑस्ट्रेलियन ओपन 2025 का पुरुष एकल खिताब किसने जीता? **लक्ष्य सेन**
- दिग्गज अभिनेता धर्मेन्द्र का निधन कितनी उम्र में हुआ? **89 वर्ष**
- खतरनाक वायरस से मौतें किस देश में रिपोर्ट हुईं? **इथियोपिया**
- प्रधानमंत्री मोदी ने कुरुक्षेत्र में कौन-सा स्मारक उद्घाटित किया? **पांचजन्य स्मारक**
- 56वें IFFI में भारत का पहला AI फिल्म महोत्सव कहाँ शुरू हुआ? **गोवा**
- टोक्यो में डेफेलिम्पिक निशानेबाजी अभियान में भारत ने कितने पदक जीते? **16 पदक**
- ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति जेर् बोल्सोनारो को कितने वर्षों की जेल हुई? **27 वर्ष 3 महीने**
- संयुक्त राष्ट्र (UN) की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में हर 10 मिनट में किसकी हत्या होती है? **महिला या लड़की**
- 2030 राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी का अधिकार किस शहर को दिया गया? **अहमदाबाद**
- संविधान दिवस पर संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में किसकी प्रतिमा का अनावरण किया गया? **डॉ. बी. आर. अंबेडकर**
- चक्रवात 'दिवताहा' भारत के किस तट की ओर बढ़ रहा है? **पूर्वी तट**
- सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से किस मुद्दे पर सख्त कानून बनाने का आग्रह किया? **दिव्यांगों पर अपमानजनक टिप्पणियाँ**



नवम्बर माह में जन्मी

उत्तराखण्ड की प्रमुख
प्रेरणादायी हस्तियाँ

नवम्बर माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रेरणादायी हस्तियाँ

उत्तराखण्ड की सर्द हवाओं में, जब हिमालय की चोटियां और भी करीब लगने लगती हैं, तब नवंबर का महीना एक खास दास्तान लेकर आता है। यह सिर्फ बदलते मौसम का नहीं, बल्कि उत्तराखंड के कई गौरवशाली सपूतों के जन्म का महीना है। इस महीने की 9 तारीख को, जब पूरा प्रदेश अपने स्थापना दिवस का जश्न मनाता है, तब कुछ और कहानियाँ भी पहाड़ों की फिजाओं में गूँजती हैं।



1. गबर सिंह नेगी (जन्म 21 अप्रैल 1895, टिहरी): गबर सिंह नेगी एक भारतीय सैनिक थे। वह प्रथम विश्वयुद्ध में मरणोपरान्त 'विक्टोरिया क्रॉस' प्राप्त करने वाले गढ़वाल के वीर सपूत थे। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान गबर सिंह नेगी 39वें गढ़वाल राइफल्स की दूसरी बटालियन में राइफलमैन (बंदूकधारी) थे। 10 मार्च, 1915 को फ्रांस में न्यूवे चैपल नामक स्थान पर जर्मन सेना के विरुद्ध लड़ते हुए युद्ध के मोर्चे पर असीम साहस, वीरता और कर्तव्यपरायणता के लिए गबर सिंह नेगी को ब्रिटिश सरकार ने सर्वोच्च सैन्य पदक 'विक्टोरिया क्रॉस' से मरणोपरान्त सम्मानित किया था। भारत सरकार के 20 अप्रैल, 1915 के गजट में इसका उल्लेख है।

2. शिवप्रसाद डबराल 'चारण' (12 नवम्बर 1912, पौड़ी गढ़वाल):

चारण उत्तराखण्ड के एक इतिहासकार, भूगोलवेत्ता, अकादमिक और लेखक थे। उन्हें 'उत्तराखण्ड का विश्वकोश' भी कहा जाता है। उन्होंने 1931 से लिखना प्रारम्भ किया। उन्होंने 18 खंडों में उत्तराखण्ड का इतिहास, 2 काव्य संग्रह, 9 नाटकों और हिन्दी और गढ़वाली भाषाओं में कई संपादित संस्करणों का लेखन किया है। उनका उत्तराखण्ड का इतिहास व्यापक रूप से विद्वानों द्वारा संदर्भ कार्य के रूप में उपयोग किया जाता है। उन्होंने उत्तराखण्ड के पुरातत्व और पारिस्थितिकी पर कई पुस्तकें लिखीं। इतना ही नहीं, चारण ने गढ़वाली भाषा की 22 दुर्लभ पुस्तकों को अपने स्वयं के प्रेस में पुनर्प्रकाशित करके विलुप्त होने से बचाया। उन्होंने मोला राम के दुर्लभ काव्य पांडुलिपि को भी फिर से खोजा।



3. प्रकाश पंत (11 नवम्बर 1960, पिथौरागढ़): प्रकाश पंत भारतीय जनता पार्टी के नेता और उत्तराखंड विधान सभा के सदस्य थे, जिन्होंने उत्तराखंड विधान सभा के प्रथम अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वे 2002 से 2007 तक पिथौरागढ़ (विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र) से निर्वाचित हुए, लेकिन 2012 के उत्तराखण्ड विधान सभा चुनाव में, वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मयूख महर से हार गए। वे उत्तराखण्ड विधान सभा के प्रथम अध्यक्ष थे। वे उत्तराखण्ड सरकार में वित्त, पर्यटन, संस्कृति, तीर्थयात्रा निधि, संसदीय कार्य एवं पुनर्गठन विभागों के मंत्री भी रहे।



4. वंदना शिवा (जन्म 5 नवम्बर 1952, देहरादून): वंदना शिवा एक दार्शनिक, पर्यावरण कार्यकर्ता, पर्यावरण संबंधी नारी अधिकारवादी एवं कई पुस्तकों की लेखिका हैं। वर्तमान में दिल्ली में स्थित, शिवा अग्रणी वैज्ञानिक और तकनीकी पत्रिकाओं में 300 से अधिक लेखों की रचनाकार हैं। शिवा ने 1970 के दशक के दौरान अहिंसात्मक **चिपको आंदोलन** में भाग लिया। वे वैश्वीकरण के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय फोरम की नेताओं में से एक हैं (जेरी मैडर, एडवर्ड गोल्डस्मिथ, राल्फ नैडर, जेरेमी रिफ़कीन आदि के साथ) और वे वैश्वीकरण में परिवर्तन लाओ (अल्टर-ग्लोबलाइजेशन मूवमेंट) नामक वैश्विक एकजुटता आंदोलन की एक विभूति हैं। उन्होंने कई पारंपरिक प्रथाओं के ज्ञान के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया है, जो कि जो भारत की वैदिक विरासत की ओर आकर्षित करता है।

5. हरीश बिष्ट (जन्म 01 नवम्बर 1957, कौसानी): वाइस एडमिरल एच.सी.एस. बिष्ट सैनिक स्कूल, घोड़ाखाल, नैनीताल, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और नौसेना अकादमी के पूर्व छात्र हैं। लगभग 39 वर्षों की सेवा के बाद, 31 अक्टूबर 2017 को भारतीय नौसेना से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने गनरी और मिसाइलों में विशेषज्ञता हासिल की है और रॉयल नेवल स्टाफ कॉलेज, ग्रीनविच, लंदन के 1992 बैच के स्नातक हैं। उन्होंने 2001 में नौसेना उच्चतर कमान पाठ्यक्रम और 2007 में एनडीसी पाठ्यक्रम में भी भाग लिया। उनकी महत्वपूर्ण नियुक्तियाँ फ्लैग ऑफिसर सी ट्रेनिंग, फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग ईस्टर्न फ्लीट, महानिदेशक भारतीय तटरक्षक और फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ ईस्टर्न नेवल कमांड रही हैं।



6. रत्न वज्र रिन्पोछे (जन्म 19 नवम्बर 1974, देहरादून): ये एक तिब्बती बौद्ध शिक्षक हैं, जिन्होंने 2017 से 2022 तक 42वें शाक्य त्रिजिन के रूप में सेवा की, उन्हें बौद्ध दर्शन और ध्यान की गूढ़ और बाह्य दोनों परंपराओं के सर्वोच्च योग्य वंशावली गुरुओं में से एक माना जाता है। वह तिब्बत के प्रसिद्ध खोन परिवार के वंशज हैं, जिसमें एक हजार से अधिक वर्षों से महान और प्रसिद्ध गुरुओं की एक अखंड वंशावली है। वह 41वें शाक्य त्रिजिन नावांग कुंगा के सबसे बड़े पुत्र हैं। वह बौद्ध धर्म की शिक्षा देते हैं और पूरे यूरोप, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और उत्तरी अमेरिका में बड़े पैमाने पर यात्रा करते हैं। इन्हें को 9 मार्च 2017 को शाक्य स्कूल के प्रमुख के रूप में सिंहासन पर बैठाया गया।

7. दीपा साही (जन्म 30 नवम्बर 1962, देहरादून): दीपा साही एक भारतीय अभिनेत्री और सैन्य पृष्ठभूमि से जुड़ी निर्माता हैं, जिन्हें 1993 की फिल्म माया मेमसाब में अभिनेता फ़ारूक़ शेख के साथ माया की भूमिका के लिए जाना जाता है। उन्होंने 2011 में फिल्म तेरे मेरे फेरे से निर्देशन में पदार्पण किया।





8. सत्यदीप मिश्रा (जन्म 27 नवम्बर 1972, देहरादून): सत्यदीप एक भारतीय अभिनेता हैं जो हिंदी सिनेमा, टेलीविजन और वेब सीरीज में काम करते हैं। उन्होंने 2011 की फिल्म *नो वन किल्ड जेसिका* से अपने करियर की शुरुआत की। उन्हें *युद्धबंदी युद्ध के* (2016), *तांडव* (2022) और *मुखबिर: द स्टोरी ऑफ अ स्पाई* (2022) के लिए जाना जाता है।

9. चित्राशी रावत (जन्म 29 नवम्बर 1989, देहरादून): चित्राशी एक भारतीय मॉडल, राष्ट्रीय स्तर की एथलीट और अभिनेत्री हैं, जिन्हें 2007 में आई फिल्म *चक दे! इंडिया* में कोमल चौटाला की भूमिका के लिए जाना जाता है। चित्राशी असल ज़िंदगी में एक हॉकी खिलाड़ी हैं। उन्होंने 17 साल की उम्र में हॉकी खेलना शुरू किया था। वह लेफ्ट स्ट्राइकर के रूप में खेलती थीं।



10. सुकीर्ति कांडपाल (जन्म 20 नवम्बर 1987, नैनीताल): ये एक भारतीय अभिनेत्री और मॉडल हैं जो हिंदी टेलीविजन में दिखाई देती हैं। उन्होंने 2000 के दशक के अंत से 2010 के दशक के प्रारंभ तक भारतीय टेलीविजन की अग्रणी अभिनेत्रियों में से एक के रूप में अपनी पहचान बनाई। अपनी हास्य शैली और जीवंत ऑन-स्क्रीन व्यक्तित्व के लिए पहचानी जाने वाली, उन्हें कई पुरस्कारों के अलावा, दो भारतीय टेलीविजन अकादमी पुरस्कारों के लिए नामांकन भी प्राप्त हुआ है।

11. जतिन सिंह बिष्ट (जन्म 15 नवम्बर 1981, नैनीताल): जतिन एक भारतीय पूर्व पेशेवर फुटबॉलर हैं, जो एक आक्रामक मिडफील्डर के रूप में खेलते थे। अपने खेल करियर के दौरान, उन्होंने नेशनल फुटबॉल लीग, आई-लीग और आई-लीग द्वितीय डिवीजन में सालगांवकर, महिंद्रा यूनाइटेड, ईस्ट बंगाल, मोहम्मडन एफसी और ओएनजीसी के साथ खेला। 2002 से 2005 तक, उन्हें भारत की ओर से 15 बार कैप भी मिला।



नवम्बर माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व



एक जीवन परिचय

वंदना शिवा

बीज संप्रभुता की वैश्विक महागाथा की नायिका

यह कहानी केवल एक व्यक्ति की जीवनी नहीं है, बल्कि उस वैश्विक आंदोलन की महागाथा है जो सदियों पुराने ज्ञान और आधुनिक कॉर्पोरेट लालच के बीच लड़ा गया। यह गाथा है डॉ॰ वंदना शिवा की— एक भौतिक विज्ञानी जो खेतों की योद्धा बन गईं, एक लेखिका जो किसानों की आवाज़ बन गईं, और एक ऐसी महिला जो आज **“अनाज की गांधी”** के नाम से पूरी दुनिया में जानी जाती है।

पर्वतीय जड़ों की पुकार

देहरादून की शांत, हरी-भरी वादियों में 5 नवंबर 1952 को वंदना शिवा का जन्म हुआ। उनका बचपन ही उनके भविष्य का आइना था। पिता, एक समर्पित वन संरक्षक, उन्हें प्रकृति की जटिलताओं और सुंदरता से रूबरू कराते थे। माँ, एक जागरूक किसान, घर में गांधीवादी मूल्यों और 'स्वदेशी' की भावना को जीवित रखती थीं। जहाँ आज बहुमंजिला इमारतें खड़ी हैं, वहाँ वंदना ने कभी कल-कल बहती नदियों और घने जंगलों को देखा था। प्रकृति के साथ यह गहरा संबंध कोई इत्तेफाक नहीं था; यह उनके डीएनए का हिस्सा था। उन्होंने अपने दादाजी को गाँव में लड़कियों की शिक्षा के लिए भूख हड़ताल करते देखा, और तभी उनके मन में अन्याय के खिलाफ खड़े होने का पहला पाठ पढ़ा गया।



विज्ञान से सामाजिक क्रांति तक

शिक्षा के क्षेत्र में वंदना हमेशा अब्बल रहीं। उन्होंने नैनीताल और देहरादून में पढ़ाई की, पंजाब विश्वविद्यालय से भौतिकी में स्नातक किया, और फिर कनाडा की ओंटारियो यूनिवर्सिटी से दर्शनशास्त्र में मास्टर डिग्री हासिल की। उनका शोध कार्य क्वांटम सिद्धांत जैसे जटिल विषय पर था। एक अकादमिक करियर, आरामदायक जीवन और शोध प्रयोगशालाओं का इंतजार कर रहा था। लेकिन भारत लौटने पर, 1970 के दशक के मध्य में, एक घटना ने सब कुछ बदल दिया। जब वे अपनी माँ के साथ हिमालय की यात्रा कर रही थीं, तो उन्होंने पाया कि उनके बचपन के घने जंगल गायब हो चुके थे और सदियों पुरानी जलधाराएँ सूख रही थीं।

इसी समय, उन्होंने **“चिपको आंदोलन”** की गूंज सुनी। साधारण ग्रामीण महिलाएँ, अपने जीवन की परवाह

किए बिना, पेड़ों को कटने से बचाने के लिए उनसे लिपट रही थीं। यह अहिंसक प्रतिरोध, जो गांधीवादी दर्शन पर आधारित था, वंदना के दिल में उतर गया। उन्होंने महसूस किया कि असली विज्ञान प्रयोगशालाओं के कांच के बर्तनों में नहीं, बल्कि उस ज़मीन पर है जिसे हम खो रहे थे। उन्होंने अपनी वैज्ञानिक ट्रेनिंग को सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर शोध के लिए मोड़ दिया।

“हरित क्रांति” का स्याह पक्ष और “नवदान्य” का उदय

1960 के दशक की “हरित क्रांति” ने भारत को खाद्य सुरक्षा दी थी, लेकिन वंदना शिवा ने इसका गहरा, स्याह पक्ष देखा। उन्होंने पाया कि इस क्रांति ने किसानों को संकर बीजों, महंगे रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर पूरी तरह निर्भर बना दिया था। मिट्टी की उर्वरता खत्म हो रही थी, पानी ज़हरीला हो रहा था और किसान कर्ज के जाल में फंस रहे थे। 1982 में, उन्होंने “विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पारिस्थितिकी के लिए अनुसंधान फाउंडेशन” (RFSTE) की स्थापना की। और फिर 1987 में, उस आंदोलन का जन्म हुआ जिसने वंदना शिवा को एक वैश्विक नेता बना दिया: **“नवदान्य”**। “नवदान्य” का शाब्दिक अर्थ है **“नौ बीज”** या **“नया उपहार”**। यह केवल एक संगठन नहीं, बल्कि बीज संप्रभुता (Seed Sovereignty)– यानी किसानों का अपने बीजों पर अधिकार का एक शक्तिशाली दर्शन था।

बीज बचाओ अभियान: एक राष्ट्रव्यापी जंग

वंदना शिवा ने **“बीज बचाओ”** (Save the Seed) अभियान शुरू किया। उन्होंने गाँव-गाँव की यात्रा की, किसानों को इकट्ठा किया, और उन्हें उनके पारंपरिक बीजों की अमूल्य विरासत के बारे में जागरूक किया। उन्होंने तर्क दिया, **“अगर हमारे पास हमारे अपने बीज हैं, तो कोई भी हमें भूखा नहीं मार सकता”**। उन्होंने भारत भर में 150 से अधिक सामुदायिक बीज बैंक स्थापित किए। यहाँ, लुप्तप्राय पारंपरिक बीजों की हज़ारों किस्में– अकेले चावल की 3,000 किस्में संरक्षित की गईं। यह एक मौन क्रांति थी, जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उस एजेंडे को सीधी चुनौती दे रही थी जो पूरी दुनिया के बीजों को पेटेंट के दायरे में लाना चाहते थे।

बायोपाइरेसी के खिलाफ़ कानूनी महायुद्ध

वंदना शिवा की लड़ाई खेतों से निकलकर अंतरराष्ट्रीय अदालतों तक पहुँची। उन्होंने एक नया शब्द गढ़ा: **“बायोपाइरेसी” (Biopiracy)**। यह उस प्रक्रिया का वर्णन करता था जिसमें पश्चिमी कंपनियाँ भारत और अन्य विकासशील देशों के सदियों पुराने पारंपरिक ज्ञान और संसाधनों पर पेटेंट हासिल कर रही थीं। उन्होंने मोनसैंटो (Monsanto) जैसी कृषि-रासायनिक दिग्गजों के खिलाफ कानूनी जंग छेड़ दी।

- **नीम का युद्ध:** एक यूरोपीय फर्म ने नीम के फफूंदनाशक गुणों पर पेटेंट के लिए आवेदन किया, जो भारत में हज़ारों वर्षों से ज्ञात था। वंदना शिवा के नेतृत्व में, यह पेटेंट रद्द कर दिया गया।
- **बासमती चावल की लड़ाई:** अमेरिकी कंपनी राइसटेक (Ricetec) ने **‘टेक्समती’** नाम से बासमती का पेटेंट लेने की कोशिश की। इस पर भी उन्होंने जीत हासिल की।

इन जीतों ने उन्हें वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई और विकासशील देशों को उनके पारंपरिक ज्ञान की रक्षा के लिए एक मज़बूत हथियार दिया।

दार्शनिक, लेखिका और ग्लोबल आइकन

डॉ० वंदना शिवा एक अथक लेखिका और वक्ता हैं। उन्होंने 20 से अधिक किताबें लिखी हैं, जिनमें **‘चुराई हुई फसल’** (Stolen Harvest), **‘जल युद्ध’** (Water Wars), और **‘तेल नहीं, मिट्टी चाहिए’** (Soil Not Oil) प्रमुख हैं। उनकी लेखनी ने दुनिया भर में लाखों लोगों को जैविक खेती, खाद्य संप्रभुता और पर्यावरण न्याय के बारे में जागरूक किया है। उनके काम ने उन्हें 1993 में प्रतिष्ठित **“राइट लाइवलीहुड अवॉर्ड”** (जिसे अक्सर “वैकल्पिक नोबेल पुरस्कार” कहा जाता है) सहित कई वैश्विक सम्मान दिलाए हैं। “टाइम” पत्रिका ने उन्हें **“पर्यावरण नायक” (Environmental Hero)** का खिताब दिया।

विरासत: एक निरंतर बहती धारा

आज, 70 के दशक के उत्तरार्ध में भी, डॉ० वंदना शिवा रुकी नहीं हैं। वह आज भी दुनिया भर में यात्रा करती हैं

युवा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करती हैं, और 'वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर' का संदेश देती हैं। उनकी कहानी हमें सिखाती है कि सच्चा विकास कंक्रीट के जंगलों और जीएमओ फसलों में नहीं, बल्कि उस मिट्टी में है जिसे हम सहेजते हैं, उस पानी में है जिसे हम बचाते हैं, और उन बीजों में है जिन्हें हम अगली पीढ़ी के लिए संरक्षित करते हैं।

डॉ० वंदना शिवा सिर्फ एक पर्यावरण कार्यकर्ता नहीं हैं; वह एक जीवित संस्था हैं, एक प्रेरणा हैं, और उस अटूट विश्वास का प्रतीक हैं कि जब तक बीज हैं, तब तक जीवन है और उस जीवन की रक्षा करना हमारा सबसे पवित्र कर्तव्य है।

डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग



नवम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस

November

2025

S

M

T

W

T

F

S

						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

नवम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस

क्र०सं०	तिथि	दिवस	विवरण
1	1 नवम्बर	हरियाणा स्थापना दिवस, कर्नाटक राज्योत्सव	हरियाणा का स्थापना दिवस और कर्नाटक राज्योत्सव दोनों हर साल 1 नवम्बर को मनाए जाते हैं। 1 नवम्बर, 1966 को पंजाब से अलग होकर हरियाणा एक नया राज्य बना था, और इसी दिन (1956 में) दक्षिण भारत के कन्नड़ भाषी क्षेत्रों को मिलाकर कर्नाटक राज्य का गठन हुआ था।
		विश्व शाकाहारी दिवस	हर साल 01 नवम्बर को विश्व शाकाहारी दिवस शाकाहारी आहार और सामान्य रूप से शाकाहार के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है। पहला शाकाहारी दिवस 1 नवम्बर, 2023 को यूके वेगन सोसाइटी की 51वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में मनाया गया था।
2	5 नवम्बर	गुरु नानक देव की जयंती	हर साल 5 नवम्बर को गुरु नानक जयंती सिख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक देव के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। इस वर्ष गुरु नानक देव की 556वीं जयंती है, जिसे प्रकाश उत्सव या गुरु पर्व के रूप में भी जाना जाता है और यह सिख समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण त्योहार है।
		विश्व सुनामी जागरूकता दिवस	विश्व सुनामी जागरूकता दिवस हर साल 5 नवम्बर को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य लोगों को सुनामी के खतरों से अवगत कराना और बचाव तथा तैयारी के उपायों के बारे में जागरूकता फैलाना है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिसंबर 2015 में इस दिन को नामित किया था, जो कि 1854 के “इनामुरा-नो-हाय” (चावल के ढेरों को जलाना) की जापानी कहानी से प्रेरित है।
3	7 नवम्बर	शिशु संरक्षण दिवस, राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस	कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसे वैश्विक स्वास्थ्य प्राथमिकता बनाने के लिए 7 नवम्बर को राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस मनाया जाता है। पूर्व केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने इस स्थिति के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए 2014 में राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस की शुरुआत की थी।
4	9 नवम्बर	उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस	उत्तराखण्ड का स्थापना दिवस 9 नवम्बर को मनाया जाता है। इस दिन, वर्ष 2000 में, उत्तराखण्ड उत्तर प्रदेश से अलग होकर भारत का 27वां राज्य बना था। यह दिन राज्य के गठन की याद में मनाया जाता है।
		कानूनी सेवा दिवस	कानूनी सेवा दिवस हर साल 9 नवम्बर को मनाया जाता है। यह कानूनी सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 के लागू होने की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जिसके तहत समाज के कमजोर वर्गों को मुफ्त कानूनी सहायता और न्याय तक पहुंच सुनिश्चित की जाती है। यह दिन न्याय को सभी के लिए सुलभ बनाने और जागरूकता बढ़ाने के महत्व पर जोर देता है।
5.	11 नवम्बर	राष्ट्रीय शिक्षा दिवस	यह दिवस 11 नवम्बर को भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। 1947 से 1958 तक, वे स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री भी रहे।

6.	12 नवम्बर	विश्व निमोनिया दिवस	विश्व निमोनिया दिवस हर साल 12 नवम्बर को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य निमोनिया के बारे में जागरूकता बढ़ाना, इसकी रोकथाम और उपचार के महत्व पर जोर देना है। यह एक ऐसी बीमारी है जो दुनिया भर में, खासकर पाँच साल से कम उम्र के बच्चों और बुजुर्गों के लिए, एक गंभीर खतरा बनी हुई है।
7.	13 नवम्बर	विश्व दयालुता दिवस	विश्व दयालुता दिवस हर साल 13 नवम्बर को मनाया जाता है। यह दिन लोगों को दयालुता के कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने और वैश्विक सद्भावना को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। इसे 1998 में विश्व दयालुता आंदोलन द्वारा शुरू किया गया था।
8.	14 नवम्बर	बाल दिवस	भारत में बाल दिवस हर साल 14 नवम्बर को पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जिन्हें बच्चों से बहुत स्नेह था। यह दिन बच्चों के अधिकारों, शिक्षा और कल्याण के महत्व पर जोर देने के लिए समर्पित है।
9.	15 नवम्बर	जनजातीय गौरव दिवस	बिरसा मुंडा जयंती; आदिवासी संस्कृति और स्वतंत्रता संघर्ष का सम्मान।
10.	16 नवम्बर	राष्ट्रीय प्रेस दिवस	हर साल 16 नवम्बर को भारतीय प्रेस परिषद (पीसीआई) को मान्यता और सम्मान देने के लिए राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया जाता है। यह दिन देश में स्वतंत्र और जवाबदेह प्रेस के अस्तित्व का जश्न मनाता है।
11.	17 नवम्बर	राष्ट्रीय मिर्गी दिवस	राष्ट्रीय मिर्गी दिवस हर साल 17 नवम्बर को मनाया जाता है। इस दिन का मुख्य उद्देश्य मिर्गी के बारे में जागरूकता बढ़ाना, इसके लक्षणों और उपलब्ध उपचारों के बारे में लोगों को शिक्षित करना और इस बीमारी से पीड़ित लोगों से जुड़े सामाजिक कलंक को कम करना है।
		अंतर्राष्ट्रीय छात्र दिवस	नाजी सैनिकों ने 17 नवम्बर 1939 को अंतर्राष्ट्रीय छात्र दिवस की स्थापना की। इस दिन 9 छात्र नेता थे और इस घटना के दौरान छात्रों की बहादुरी असाधारण थी।
12.	19 नवम्बर	अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस	अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस हर साल 19 नवम्बर को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य समाज में पुरुषों के योगदान को पहचानना और उनके सामने आने वाली स्वास्थ्य (विशेषकर मानसिक स्वास्थ्य), लैंगिक समानता और अन्य मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाना है। यह दिन पुरुषों के लिए सकारात्मक रोल मॉडल को बढ़ावा देने और समाज में लैंगिक संबंधों को बेहतर बनाने पर जोर देता है।
		विश्व शौचालय दिवस	हर साल 19 नवम्बर को मनाया जाने वाला विश्व शौचालय दिवस, एक आधिकारिक कार्यक्रम है, जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्वीकृत है और जिसका उद्देश्य स्वच्छता संकट को तत्काल रूप से दूर करने के लिए वैश्विक जागरूकता और कार्रवाई को बढ़ाना है। यह दिन वर्ष 2013 से मनाया जा रहा है, और यह प्रयास सतत विकास लक्ष्य 6- 2030 तक सभी के लिए पानी और स्वच्छता सुनिश्चित करना, के हिस्से के रूप में सुरक्षित और सुलभ शौचालय सुविधाओं के महत्व पर जोर देने के लिए समर्पित है। इस वर्ष की थीम 'शौचालय- शांति के लिए एक स्थान' है।
13.	20 नवम्बर	विश्व बाल दिवस	विश्व बाल दिवस हर साल 20 नवम्बर को बच्चों के अधिकारों और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। यह दिन बच्चों के बीच अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता और जागरूकता को भी बढ़ावा देता है। यह तारीख संयुक्त राष्ट्र द्वारा बाल अधिकारों पर घोषणा और कन्वेंशन को अपनाने का प्रतीक है, जो 1959 और 1989 में हुआ था।

14.	21 नवम्बर	विश्व मत्स्य दिवस	विश्व मत्स्य दिवस हर साल 21 नवम्बर को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य मछुआरों की आजीविका को मजबूत करना, मत्स्य संसाधनों का संरक्षण करना और सतत मत्स्य पालन को बढ़ावा देना है। यह दिवस समुद्री पारिस्थितिकी और जैव विविधता के संतुलन में मछलियों के महत्व को भी रेखांकित करता है।
		विश्व टेलीविजन दिवस	हर साल 21 नवम्बर को विश्व टेलीविजन दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, इस दिन टेलीविजन की दैनिक भूमिका पर प्रकाश डाला जाता है क्योंकि यह लोगों को प्रभावित करने वाले विभिन्न मुद्दों को प्रस्तुत करता है।
15.	25 नवम्बर	महिलाओं के विरुद्ध हिंसा उन्मूलन हेतु अंतर्राष्ट्रीय दिवस	हर साल 25 नवम्बर को महिलाओं के विरुद्ध हिंसा उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है। इस दिवस की स्थापना 1993 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की गई थी।
16.	26 नवम्बर	भारत का संविधान दिवस	हर साल 26 नवम्बर को भारत संविधान दिवस मनाता है, जिसे विधि दिवस या संविधान दिवस भी कहा जाता है। 26 नवम्बर, 1949 को भारत की संविधान सभा ने भारतीय संविधान को अपनाया था। यह 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ।
		राष्ट्रीय दुग्ध दिवस	राष्ट्रीय दुग्ध दिवस हर वर्ष 26 नवम्बर को मनाया जाता है। यह दिन भारत के “श्वेत क्रांति के जनक” डॉ. वर्गीज कुरियन की जयंती को समर्पित है। वर्ष 2025 का समारोह न केवल उनके दूरदर्शी नेतृत्व को श्रद्धांजलि देता है, बल्कि भारत की उस अद्भुत यात्रा को भी दर्शाता है जिसमें देश एक दूध-घाटा राष्ट्र से दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक बना और आज वैश्विक उत्पादन का लगभग 25% हिस्सा अकेले भारत देता है।
17.	27 नवम्बर	राष्ट्रीय अंगदान दिवस	राष्ट्रीय अंगदान दिवस हर साल 27 नवम्बर को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य अंगदान के बारे में जागरूकता बढ़ाना और लोगों को अंगदान के लिए प्रोत्साहित करना है। इस दिन का मुख्य लक्ष्य लोगों को अंगदान के महत्व के बारे में शिक्षित करना और अंगदान से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करना ताकि अधिक से अधिक लोग अंगदान का संकल्प लें।
18.	29 नवम्बर	अंतर्राष्ट्रीय जगुआर दिवस	हर साल 29 नवम्बर को अंतर्राष्ट्रीय जगुआर दिवस के रूप में मनाया जाता है। उत्तरी अमेरिका की इस सबसे बड़ी जंगली बिल्ली को सतत विकास के प्रतीक, जैव विविधता के संरक्षण के लिए एक छत्र प्रजाति और मध्य एवं दक्षिण अमेरिका की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के एक हिस्से के रूप में सम्मानित किया जाता है।
19.	30 नवम्बर	रासायनिक युद्ध के सभी पीड़ितों के लिए स्मरण का एक यादगार दिवस	रासायनिक युद्ध के सभी पीड़ितों के लिए स्मरण का एक यादगार दिवस 30 नवम्बर को मनाया जाता है। यह दिन उन सभी पीड़ितों की स्मृति को सम्मान देने और रासायनिक हथियारों के पूर्ण उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की प्रतिबद्धता की पुष्टि करने के लिए मनाया जाता है। यह दिवस रासायनिक हथियार निषेध संगठन (OPCW) द्वारा आयोजित किया जाता है।



चित्र दीर्घा

महाविद्यालय उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ

वाद-विवाद प्रतियोगिता

दिनांक: 06.11.2025



उत्तराखण्ड राज्य के 25 वें स्थापना दिवस (रजत जयंती) के उपलक्ष्य में महाविद्यालय में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी क्रम दिनांक 06/11/2025 को डॉ० गार्गी लोहनी द्वारा 'वाद-विवाद प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिता

दिनांक: 07.11.2025



उत्तराखण्ड राज्य के 25 वें स्थापना दिवस (रजत जयंती) के उपलक्ष्य में महाविद्यालय में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी क्रम दिनांक 07/11/2025 को डॉ० रेखा द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम (सांस्कृतिक नृत्य (एकल / सामूहिक) / गायन (एकल / सामूहिक) का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिता

(41)

दिनांक: 08.11.2025



उत्तराखण्ड राज्य के 25 वें स्थापना दिवस (रजत जयंती) के उपलक्ष्य में महाविद्यालय में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी क्रम दिनांक 09/11/2025 को डॉ० संतोष पंसारी द्वारा पोस्टर, स्लोगन, भाषण एवं ऐपण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

उत्तराखण्ड रजत जयन्ती समारोह

दिनांक: 09.11.2025



उत्तराखण्ड राज्य के 25 वें स्थापना दिवस (रजत जयन्ती) के उपलक्ष्य में एन.एस.एस. प्रभारी डॉ० अंजु निगम द्वारा महाविद्यालय में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विगत 03 दिवसी के कार्यक्रमों / प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान में 'एक-दिवसीय शिविर' का आयोजन भी किया गया। स्वयंसेवियों द्वारा महाविद्यालय प्रांगण में स्वच्छता/साफ-सफाई के माध्यम से श्रम दान किया गया।

जनजातीय गौरव दिवस

(43)

दिनांक: 15.11.2025



दिनांक 15.11.2025 को महाविद्यालय में डॉ० खुशबू आर्या द्वारा **भगवान बिरसा मुण्डा की 150वीं जयन्ती समारोह (जनजातीय गौरव दिवस)** का आयोजन किया गया। साथ ही जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर छात्र-छात्राओं हेतु भाषण, पोस्टर एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिनमें क्रमशः तनुजा नेगी, ज्योति एवं मेघना प्रथम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

दीक्षारम्भ कार्यक्रम एवं दो-दिवसीय पुस्तक मेला

दिनांक: 17.11.2025



दिनांक 17.11.2025 को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के अध्ययन केन्द्र संख्या- 17066 के तत्वाधान में समन्वयक डॉ० खीला कोरंगा एवं सह-समन्वयक डॉ० जितेन्द्र प्रसाद द्वारा बी०ए० प्रथम सेमेस्टर के छात्राओं हेतु 'दीक्षारम्भ कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। इसके साथ ही महाविद्यालय में प्रारम्भ हो रहे 'दो-दिवसीय निःशुल्क पुस्तक मेले' का भी शुभारम्भ किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं और विभिन्न संकायों के प्राध्यापकों द्वारा विभिन्न विषयों की पुस्तकें प्राप्त की गई।

तरुण सभा युवा संसद प्रतियोगिता

दिनांक: 20.11.2025



दिनांक 20.11.2025 को महाविद्यालय में नोडल अधिकारी डॉ० रेखा के निर्देशन में 'तरुण सभा युवा संसद प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं उजराड़ सल्ट की जिला पंचायत सदस्य मनमोहन बंगारी तथा विशिष्ट अतिथि, महाविद्यालय की प्रभारी प्राचार्या डॉ० शैफाली सक्सेना द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्र-छात्राओं ने निर्धारित एक घंटे की अवधि में संसदीय कार्यवाही के विभिन्न चरणों का प्रदर्शन किया, जिसमें नव निर्वाचित सदस्यों का शपथ ग्रहण, प्रश्न काल, सदन के पटल पर प्रश्न रखे जाना, महासचिव द्वारा राज्यसभा के संदेशों का वाचन, नियम 193 के अंतर्गत अल्पकालीन चर्चा व कृषि मंत्री द्वारा नए विधेयक के पुनर्स्थापन की कार्यवाही आदि शामिल थे।

संविधान दिवस

(46)

दिनांक: 26.11.2025



दिनांक 26.11.2025 को प्रभारी प्राचार्य डॉ० गोरख नाथ की अध्यक्षता में 'संविधान दिवस' का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष में राष्ट्रगीत के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर समस्त प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं द्वारा 'वन्दे मातरम गायन' भी किया गया।



कलाकृति

अनुभाग



चित्रण: मीनू
बी०एस-सी० पंचम सेमेस्टर

इस माह का विचार:
रंगों की अपनी एक आवाज होती है।



चित्रण: बबीता
बी०एस-सी० पंचम सेमेस्टर

इस माह का विचार:

चित्रकारी एक सार्वभौमिक भाषा है, जिसे हर कोई समझ सकता है।



चित्रण: बबीता
बी०एस-सी० पंचम सेमेस्टर

इस माह का विचार:

कलाकार कुदरत का प्रेमी है अतः वह उसका दास भी है और स्वामी भी।



चित्रण: डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग



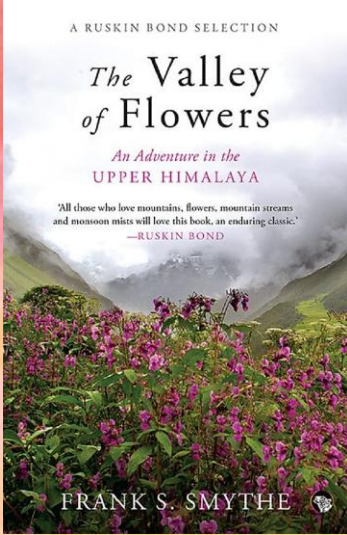
कुछ

अनुशंसित

पुस्तकें

(अंक नवम्बर, 2025)

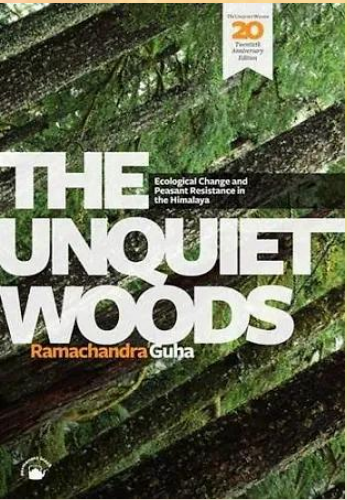
कुछ अनुशंसित पुस्तकें



द वैली ऑफ फ्लासर्स: एन एडवेंचर इन अपर हिमालय

लेखक: फ्रैंक एस. स्मिथ

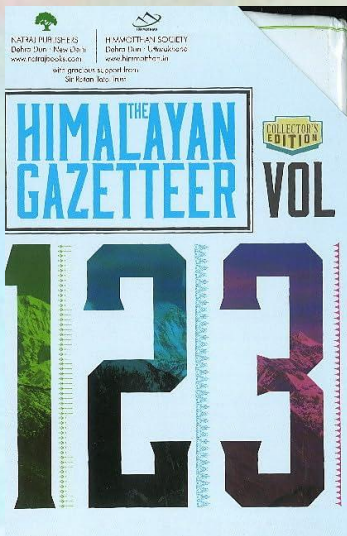
1931 में, ब्रिटिश पर्वतारोहियों का एक दल- जिसमें फ्रैंक एस. स्मिथ भी शामिल थे—माउंट कामेट की सफल चढ़ाई से लौटते समय वर्तमान उत्तराखंड के जोशीमठ के ऊपर जंगल में खराब मौसम से बचने के लिए आश्रय की तलाश कर रहे थे, जब वे हरे-भरे और रंगीन भ्यूंदर घाटी, फूलों की घाटी में पहुंचे। 1937 के मानसून में, स्मिथ दार्जिलिंग से चार तिब्बतियों- उनके पर्वतारोहण साथी और सहायक- खाद्य सामग्री और छह सप्ताह के अवकाश के साथ घाटी लौटे। इस साहसिक कार्य में, स्मिथ ने घाटी का व्यापक रूप से अन्वेषण किया, पौधों की संपदा के बीच से फूलों और बीजों की पहचान की और उन्हें एकत्र किया। उन्होंने और उनके दोस्तों ने नीलगिरि पर्वत और माना पीक पर भी चढ़ाई की और माउंट रताबन से हार गए। फिर भी, हिमालय की असीम विविधता को देखने के सौभाग्य तथा आलस्य के आनंद पर चिंतन करने में बिताए गए उपयोगी समय के लिए ये मामूली कीमतें थीं।



द अनक्वाइट वुड्स

लेखक: रामचन्द्र गुहा

हिमालय में वनों की कटाई रोकने के लिए चिपको आंदोलन जैसे लोकप्रिय प्रयास विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हैं। यह कम ही लोग जानते हैं कि इन आंदोलनों का इतिहास सौ साल से भी ज्यादा पुराना है। उत्तर भारत के उप-पर्वतीय जंगलों में इस लंबी अवधि को समझने के लिए दो विद्वत्तापूर्ण परंपराओं का मेल जरूरी था: किसान विरोध का समाजशास्त्र और इतिहास का पारिस्थितिक रूप से उन्मुख अध्ययन।



द हिमालयन गजेटियर

लेखक: एडविन टी० एटकिंसन

हिमालय ने सदियों से मानव जाति की कल्पना और रुचि को मोहित किया है। भारत का समृद्ध इतिहास, समाज और संस्कृति, दुनिया की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला से गहराई से प्रभावित हैं। आखिरकार, आधुनिक यात्रा से पहले, हिमालय लोगों, वस्तुओं और विचारों के लिए भारत का सबसे महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार था। दुनिया की सबसे युवा पर्वत श्रृंखला का यह दुर्लभ और अमूल्य रिकॉर्ड एक शताब्दी बाद फिर से प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक जिले, खान-पान की आदतों, रीति-रिवाजों, प्रभावों के साथ-साथ लोगों और उनके व्यवसायों पर विस्तृत जानकारी युवा पाठकों की एक पूरी नई पीढ़ी को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करेगी। इस प्रकाशन का उद्देश्य एटकिंसन के समृद्ध आंकड़ों को शोधकर्ताओं के लिए एक बार फिर सुलभ बनाना है ताकि हम हिमालय के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिक विरासत के संरक्षण के अपने निरंतर कार्य में सूचना के इस समृद्ध स्रोत का संदर्भ ले सकें, जो तेज गति और बड़े पैमाने पर अनियोजित विकास के कारण भयावह रूप से खतरे में हैं।

उत्तराखण्ड रजत जयन्ती माह के उपलक्ष में राज्य पर आधारित उक्त पुस्तकों में हिमालयी क्षेत्र के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने वाले क्लासिक विवरण शामिल हैं।

*नोट: अगले माह के अंक में कुछ अन्य पुस्तकें आपके समक्ष फिर से प्रस्तुत होंगी।

देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य





क्या आप जानते हैं चीन में किसी भी डूबते हुए इंसान को बचाना गैरकानूनी है चीनी में एक प्राचीन मान्यता है की जब कोई इंसान पानी में डूबता है तो वह उसके भाग्य में लिखा है किसी भी इंसान के भाग्य को बदला नहीं जा सकता इसी मान्यता के वजह से चीन में यह अजीब कानून बनाया गया है की कोई किसी डूबता हुए इंसान को नहीं बचा सकता है।



"PG Bugatti" दुनिया की सबसे महेंगी साइकिल हैं जिसका कीमत 26 लाख हैं। इस साइकिल का कलर आप अपनी पसंद के हिसाब से बदल सकते हैं। और यह साइकिल का बजन मात्र 5 KG हैं, इसे कार्बन फाइबर से एयरोडायनामिक तकनीक से बनाए गए हैं।

@Gk_Questions_Ncert



रेलवे स्टेशन पर सुनाई देने वाली आवाज 'यात्रीगण कृपया ध्यान दें' आवाज सरला चौधरी जी की है



हर सिक्के पर सन् के नीचे एक खास निशान होता है जिससे आप ये पता कर सकते हो कि ये सिक्का कहा बना है।

मुंबई- हीरा [💎]

नोएडा- डॉट [•]

हैदराबाद- सितारा [☆] कोलकाता- कोई निशान नहीं है।

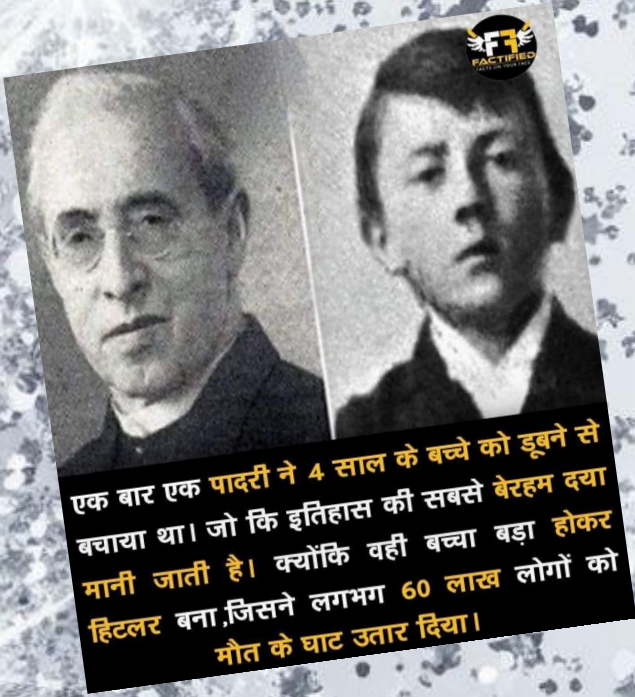


दुनिया की सबसे बड़ी किताब जिसका वजन 1420 किलो है उसके एक पेज को पलटने के लिए महज 6 लोगों की जरूरत पड़ती है।

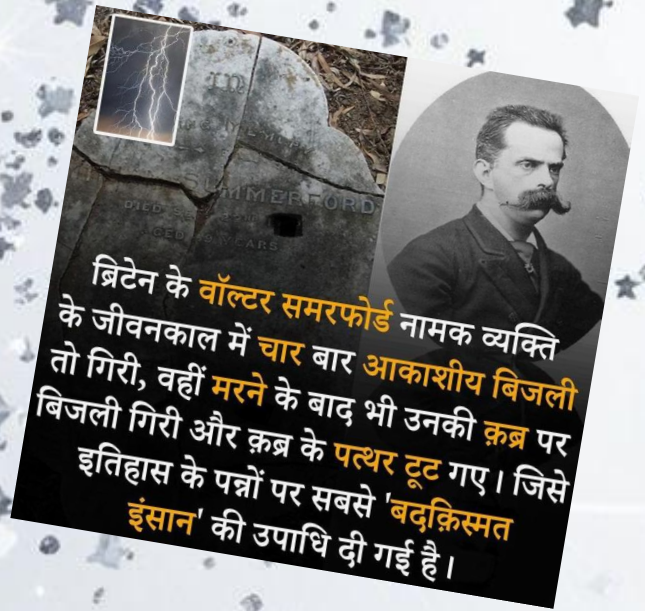
thefactwala.in



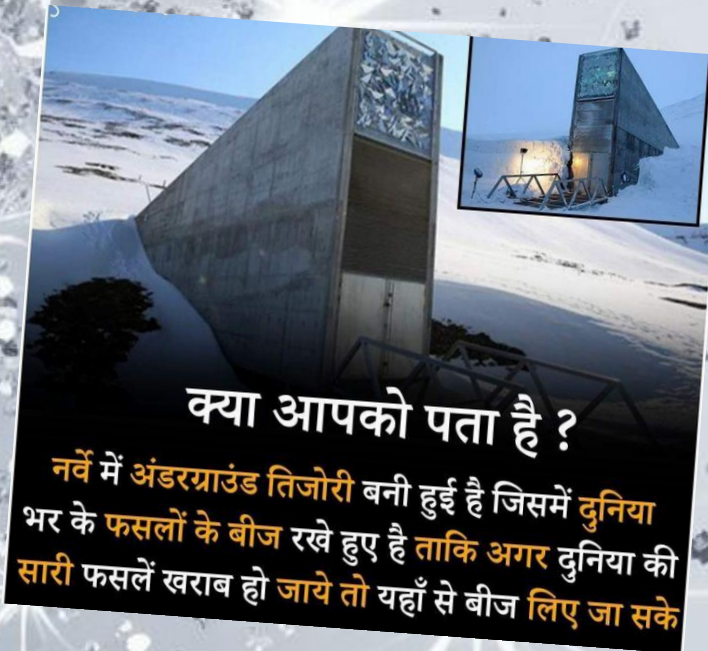
दुनिया की पहली सेल्फी 1839 में रॉबर्ट कॉर्नेलीयस नाम के व्यक्ति ने ली थी, उस समय इसको सेल्फी लेने में 3 मिनट लगे थे।



एक बार एक पादरी ने 4 साल के बच्चे को डूबने से बचाया था। जो कि इतिहास की सबसे बेरहम दया मानी जाती है। क्योंकि वही बच्चा बड़ा होकर हिटलर बना जिसने लगभग 60 लाख लोगों को मौत के घाट उतार दिया।



ब्रिटेन के **वॉल्टर समरफोर्ड** नामक व्यक्ति के जीवनकाल में चार बार **आकाशीय बिजली** तो गिरी, वहीं **मरने** के बाद भी उनकी **क्रब्र** पर बिजली गिरी और **क्रब्र** के **पत्थर टूट गए**। जिसे इतिहास के पन्नों पर सबसे '**बदकिस्मत इंसान**' की उपाधि दी गई है।



क्या आपको पता है ?

नर्वे में **अंडरग्राउंड तिजोरी** बनी हुई है जिसमें दुनिया भर के **फसलों के बीज** रखे हुए हैं ताकि अगर दुनिया की सारी फसलें खराब हो जाये तो यहाँ से बीज लिए जा सके



THE CONJURING 2 नाम की मूवी इतनी **डरावनी** है कि इससे अब तक 37 लोग मर चुके हैं जो कि इस **मूवी** का **WORLD RECORD** है।



दुनिया का सबसे मैला आदमी जो 60 साल से नहाया नहीं था, नहाने के कुछ महीनों बाद ही 94 साल की उम्र में मर गया। वह स्वस्थ भोजन से भी दूर रहता था और सिर्फ मरे जानवरों को खाता था। उसका कहना था साफ सफाई उसे बीमार कर सकती है।



Zoo जींस एक ऐसी कंपनी है जो अपनी **जींस** को **शेर** चीते के दांतों से फड़वा कर **डिजाइन** करवाती है



रोजगार

समाचार



देश में 2025/2026 की आगामी परीक्षाएँ

अखिल भारतीय केंद्र सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में रोजगार (दिसंबर 2025/2026 की शुरुआत)

- एसएससी जीडी कांस्टेबल 2026: ~25,487 रिक्तियां, आवेदन जारी।
- आरआरबी जेई 2025/2026: ~2,569 जूनियर इंजीनियर पद (विस्तारित पंजीकरण)।
- रेलवे (एनआर/आरआरसी): ~4,110+ अप्रेंटिसशिप और अन्य तकनीकी पद।
- अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम: ओआईसीएल एओ (~300), राइट्स प्रबंधक/इंजीनियर (~450+), एचसीएल (~60), बीडीएल (~150+ प्रशिक्षु), आईबी एमटीएस (~360+)।

अधिक विवरण कैसे प्राप्त करें

- रोजगार समाचार: रोजगार समाचार आधिकारिक अधिसूचनाओं और उनकी तिथियों के लिए एक प्राथमिक स्रोत है।
- परीक्षा पोर्टल: करियर 360 और करियर पावरजैसी प्रतिष्ठित वेबसाइटें भी सरकारी नौकरियों के बारे में अद्यतन जानकारी प्रदान करती हैं।

उत्तराखण्ड में 2025 की आगामी परीक्षाएँ

उत्तराखण्ड राज्य सरकार एवं स्थानीय रोजगार (2025 के अंत/आगामी)

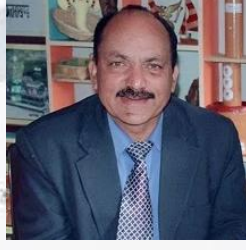
- वर्तमान/हालिया (दिसंबर 2025 की समय सीमा): आईआईटी रुड़की, टीएचडीसी, पीजीसीआईएल, एनआईएच रुड़की (एसआरएफ/परियोजना पद)।
- चालू/आगामी (2026/देर से 2025): 136 पशुधन प्रसार अधिकारी, संकाय (मेडिकल कॉलेज श्रीनगर), 90 पर्यवेक्षक, संभावित 2364 चतुर्थ श्रेणी पद, उत्तराखंड समूह जी (ग्रुप सी) ड्राइव।
- विश्वविद्यालय/अनुसंधान: एचएनबीजीयू, जीबीपीयूएटी, आईआईटी रुड़की में जेआरएफ/एसआरएफ/प्रोजेक्ट फेलोशिप।

अपडेट कैसे रहें

सबसे सटीक और विस्तृत जानकारी के लिए, आधिकारिक वेबसाइटों पर जाना सबसे अच्छा है:

- यूकेपीएससी: psc.uk.gov.in
- यूकेएसएसएससी: sssc.uk.gov.in

उत्तराखण्ड देवभूमि-मातृभूमि!



उत्तराखण्ड देवभूमि-मातृभूमि
शत्-शत् वंदन अभिनंदन
दर्शन, संस्कृति, धर्म, साधना
श्रम रंजित तेरा कण-कण।
अभिनंदन अभिनंदन
उत्तराखण्ड देवभूमि....

गंगा-यमुना तेरा आंचल
दिव्य हिमालय तेरा शीश
सब धर्मों की छाया तुझ पर
चार धाम देते आशिष
श्री बदरी, केदारनाथ हैं
श्री बदरी, केदारनाथ हैं
कलियर, हिमकुंड अति पावना।
अभिनंदन अभिनंदन
उत्तराखण्ड देवभूमि....

अमर शहीदों की धरती है
थाती वीर जवानों की
आंदोलनों की जननी है ये
कर्मभूमि बलिदानों की
फूले-फले तेरा यश वैभव
तुझ पर अर्पित है तन-मन
अभिनंदन-अभिनंदन
उत्तराखण्ड देवभूमि

रंगीली घाटी शौखों की या
मंडुवा झुंगुरा भट अन्न-धन
रुम-झुम-रुम-झुम, झुमैलो-झुमैलो
ताल, खाल, बुग्याल, ग्लेशियर
दून तराई भाबर बण
भांति-भांति लगै गुजर है चाहे
भांति-भांति लगै गुजर है चाहे
फिर ले उछास भरे छै मैं
अभिनंदन-अभिनंदन
उत्तराखण्ड देवभूमि

गौड़ी-भैंस्यून गुंजदा गुठयार
ऐपण सज्यां हर घर हर द्वार
काम-धाण की धुरी बेटी ब्वारी
कला प्राण छन शिल्पकार
बण पुंगड़ा सेरा पंदेरो मां
बण पुंगड़ा सेरा पंदेरो मां
बंटणा छन सुख-दुख संग-संग
अभिनंदन-अभिनंदन
उत्तराखण्ड देवभूमि

कस्तूरी मृग, ब्रह्मकमल है
फ्यूंली, बुरांस, घुघती, मोनाल
रुम-झुम-रुम-झुम, झुमैलो-झुमैलो
ढोल नगाड़े, दमुवा हुड़का
रणसिंघा, मुरली सुर-ताल
जागर, हारुल, थड्या, झुमैलो
ज्वाड़-छपेली पांडव नर्तना।
अभिनंदन-अभिनंदन
उत्तराखण्ड देवभूमि

कुंभ, हरेला, बसंत, फूलदेई
उत्तरैणी कौथिग नंदा जात
सुमन, केसरी, जीतू, माधो
चंद्रसिंह वीरों की थात
जियारानी तीलू रौंतेली
जियारानी तीलू रौंतेली
गौरा पर गर्वित जन-जन
अभिनंदन-अभिनंदन
उत्तराखण्ड देवभूमि

-श्री हेमन्त बिष्ट

“सा विद्या या विमुक्तये”



कवर एवं पत्रिका डिजाईन: डॉ० शैफाली सक्सेना